

ज्ञानामृत

नवम्बर, 1986

वर्ष 22 * अंक 5

मूल्य 1.50



कलकत्ता: स्वर्णिम ज्यति राजयोग मिनी-मेला के उद्घाटन समारोह में ब. कु. दादी निर्मलशान्ता जी प्रवचन करती हुई। उनके बाएं विराजमान हैं कलकत्ता के जेरिक भगत डॉ. पी.के. सराफ एंव भ्राता देवकीनंदन पोद्दार विधानसभा सदस्य।

करौलाधारा (मथुरा जिल्ला) में आयोजित आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन में ब. कु. दादी शर्मिष्ठा जी तथा तुषकतम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता नटराजन जी वीप प्रवर्तित कर रहे हैं।

झालीमार (दिल्ली) में आयोजित आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन मुख्य। ब. कु. दादी हुदयमोहिनी जी तथा भ्राता रामनंद यादव, भारत के ग्रामीण विकास राजमन्त्री वीप प्रवर्तित करते हुए।

जयपुर: पञ्चहरा मेले में देवियों की झांकी का उद्घाटन करते हुए राजस्थान प्रदेश के शिक्षा एंव स्वास्थ्य मंत्री भ्राता हीरलाल देवपुरा जी।





जयपुर: दशहरा मेले में लगाई बतन देवियों की झांकी का अवलोकन करते हुए अखिल भारतीय कांग्रेस (आई) के महासचिव भ्राता नवलकिशोर जी शर्मा अन्य भाई-बहनों के साथ ।



सतना में विश्व शान्ति समारोह के अवसर पर ईश्वरीय सीमात लेने के पश्चात म. प्र. के खाद्य मन्त्री भ्राता कन्हैया लाल जी तथा विधायक सालता प्रसाद जी व. कु. महेंद्र जी के साथ ।



ब्रह्माकुमारी चक्रधारी तथा ज्योति बहन दुबई में भारत के कोसलेट जनरल भ्राता अरुण कुमार तथा उनकी धर्मपत्नी के साथ दिखाई दे रहे हैं ।



सिरसी : कर्नाटक के लघु उद्योगमंत्री भ्राता आर.वी. देशपांडे जी को ब्र.कु. गायत्री 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' अभियान से अवगत करती हुई ।



माउंट आबू: दादी प्रकाशमणि जी तथा अन्य भाई-बहने वू.एस.एस.आर. के प्रसिद्ध मूर्तिकार भ्राता रजगचिव जी के साथ ।



सतना सेवाकेंद्र द्वारा नए भवन के निर्माण हेतु आयोजित भूमि पूजन कार्यक्रम में माननीय कन्हैयालाल जी शर्मा, खाद्यमंत्री, म.प्र. बी.के. निर्मला तथा बी.के. अवधेश जी भूमि पूजन में भाग लेते हुए।



रायपुर: भ्रता म.क. आलकरी, सम्मग्रीय अभियंता (दूरभाष), बहन शोभा आलकरी, डॉ. सोमनाथ साहू, अध्यक्ष इंडियन मेडिकल एसोसिएशन एवं संचालक म.प्र. राज्य अन्त्यावसायी निगम, तथा डॉ. चन्द्रिका साहू, एक्सरे विशेषज्ञ के सेवाकेंद्र पर पधारने पर ब्र.कु. कमला संग्रहालय का अवलोकन कराती हुई।

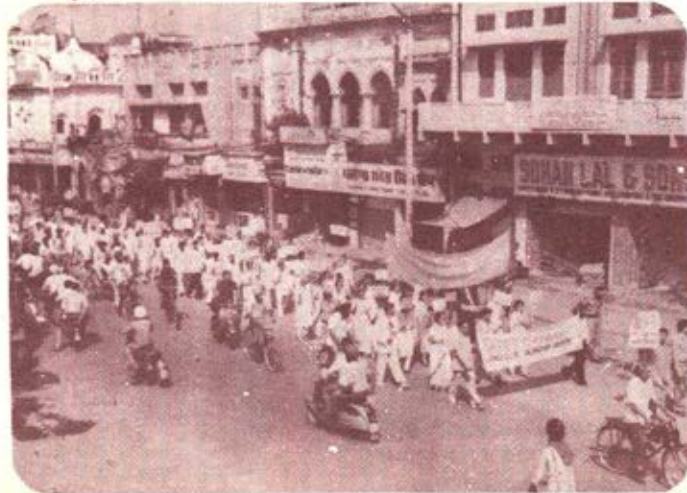


दुबई में प्रवचन पश्चात् चिनमयानंद जी के शिष्यों के साथ ब्रह्माकुमारी बहन चक्रधारी जी, ज्योति तथा हेमा जी ।



वर्धा: न्यू इंग्लिश हाई स्कूल, पुनियर कॉलेज के २००० विद्यार्थियों के समक्ष ब्र.कु. शोभा शांति अभियान का उल्लास कर रही हैं। में

आलांघर: गांधी जयंति पर लायंस क्लब आलांघर की ओर से आयोजित शांति यात्रा में ब्र.कु.ई. विश्वविद्यालय के भाई-बहनों ने भाग लिया । शांति यात्रा का एक दृश्य ।





शालीमार (दिल्ली): में आयोजित आध्यात्मिक मेले के अवसर पर निकाली गई शोभा यात्रा का दृश्य ।



कर्नाटक के मुख्यमंत्री भ्राता रामकृष्ण हेगडे जी को 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' के विषय में समझाती हुई श्री.के. 'गायत्री जी।



रायपुर: विश्वशांति अभियान के उद्घाटन से पूर्व शिवबाबा की याद में स्रडे हुए ब्र.कु. कमला जी, बहन शोभा आलकारी जी, भ्राता म.कृ. आलकारी जी, डॉ. सोमनाथ साहूजी, भ्राता ज्ञान वासवानी व डॉ. चन्द्रिका साहू जी ।



लखनऊ (सुरक्षाद्वारा) सेवाकेंद्र की ओर से शांति अभियान के उपलक्ष्य में निकाली गई शांति यात्रा का दृश्य ।



जहांगीरपुरी (दिल्ली): में सजाई गई चेतन देवियों की झांकी का उद्घाटन दीप जलाकर करते हुए भ्राता महेंद्र सिंह जी, मेट्रोपोलिटन काउंसिलर, दिल्ली ।



नवसारी: सेवाकेंद्र की ओर से 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' के निमित्त किए गये कार्यक्रम में प्रखर गांधीवाद भ्राता दिलखश वीवान जी प्रवचन करते हुए ।

विषय-सूची

१. दस लाख मिनिट्स संग्रह अभियान (संक्षिप्त रिपोर्ट) १
२. यात्रा—कम्युनिस्ट देशों की ! (सम्पादकीय) २
३. शुभ दीपावली ५
४. स्वर्णिम प्रभात अब आएगा ! ४
५. कुमारों के साथ दादी कुमार्का ५
६. कोई शिक्षर पे कोई भंवर में ९
७. कला-सहयोगी बनाने की १२
८. बात-बात में बात १६
९. भारतीय युवकों में संस्कारों की क्रांति राष्ट्रहित में आवश्यक १७
१०. ज्ञान ही जीवन को कलात्मक बनाता है २०
११. स्वर्णिम विचार से स्वर्णिम संसार १९
१२. अहंकार का बहिष्कार २२
१३. लाइन क्लीयर २४
१४. आध्यात्मिक सेवा समाचार २५
१५. दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम ३०
१६. पहली हल करो तो जानें ३२

दस लाख मिनिट्स संग्रह अभियान संक्षिप्त रिपोर्ट

संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा घोषित अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष के अंतर्गत 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' अभियान एक मास १६ सितम्बर से १६ अक्टूबर तक चलाया गया। इस अभियान में विश्व के ६० देशों ने भाग लिया। हर देश में राष्ट्रीय समन्वय समिति बनाई गई तथा अंतर्राष्ट्रीय समन्वय का कार्यालय लंदन में रखा गया। विश्व के विशिष्ट गणमान्य व्यक्तियों ने इसका संरक्षक बनकर इस आयोजन में सहयोगी बने। कुछेक संरक्षकों के नाम निम्नलिखित हैं:—

श्री बाबहाक, प्रधानमंत्री ऑस्ट्रेलिया, श्री डेविड लागे, प्रधानमंत्री न्यूजीलैंड, भ्राता जेम्स कालाहॉन, पूर्व प्रधानमंत्री, इंग्लैंड, न्यायामूर्ति नगेन्द्र सिंह, अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय, श्री दलाईलामा, बिशप डेस्मॉन्ड, दुट्ट। राष्ट्रसंघ के महासचिव ने

विशेष संदेश देकर इस अभियान के लिए प्रोत्साहन दिया। इस अपील की रानी एलिजाबेथ, श्रीमती माग्रेट पैचर, इंग्लैंड की प्रधानमंत्री, श्री एलिस क्लार्क, ट्रिनिडॉड तथा टुबेगो के राष्ट्रपति, सेनेटर एडवर्ड केन्नेडी, मदर टेरिसा तथा अन्य विशिष्ट व्यक्तियों ने भर्त्सना की।

भारत में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय इस आयोजन में अग्रणी बना। भारत साधु समाज, अंतर्राष्ट्रीय सनातन धर्म सभा जैसी संस्थाओं ने तथा नेशनल केडेटकोर तथा अन्य संगठनों ने भी इसमें सहयोग दिया।

भारत में राष्ट्रीय संरक्षक के रूप में निम्नलिखित व्यक्ति भी सम्मिलित थे:—

१. फील्ड मार्शल के.एम. करियाप्पा।
२. श्री आर.के. त्रिवेदी, गुजरात के राज्यपाल
३. न्यायमूर्ति एम.एच. बेग, अल्प-संख्यक आयोग के अध्यक्ष तथा भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश।
४. भ्राता बी.डी. जती, भारत के पूर्व उप-राष्ट्रपति।
५. बी.सी. पटेल, निदेशक संयुक्त राष्ट्रसंघ सूचना केंद्र नयी दिल्ली।

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी ने भी इस अपील के लिए विशेष संदेश देकर पूर्ण रीति-से सहमति प्रकट की।

इस अभियान का शुभारंभ १६ सितम्बर को किया गया। प्रातः सफदरजंग फ्लाइंग क्लब नयी दिल्ली से हॉट एयर इन्द्रधनुष बैलून, अपील का बैनर लिये उड़ाया गया। श्रीमती माग्रेट अलवा, युवा महिला, खेल विभाग की राज्यमंत्री, तथा संसद सदस्य भ्राता विश्वबन्धु गुप्ता ने इस बैलून की उड़ान में भाग लिया। १६ सितम्बर को अभियान के शुभारंभ समारोह नयी दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, अहमदाबाद तथा अन्य प्रांतीय राजधानियों में रखे गये। विश्वविद्यालय मुख्यालय माउंट आबू में भी कार्यक्रम रखा गया। इन शुभारंभ समारोहों में भाग लेनेवालों में गुजरात के राज्यपाल भ्राता आर.के. त्रिवेदी, श्री आर.के. करजिया, डॉ. जी.के. सर्राफ, कलकत्ता के शेरिफ, श्री छोगाराम बकोलिया, राजस्थान के खाद्यमंत्री आदि-आदि थे।

शांति के लिए दान के लिये फॉर्म पर हस्ताक्षर करनेवालों में भारत के मुख्य न्यायाधीश श्री पी.एन. भगवती जी, उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता एस. नटराजन जी, तथा भ्राता एम.एम. दत्त जी, केंद्रीय मंत्री, डॉ. राजेंद्र कुमारी बाजपेयी, भ्राता के.आर. नारायणन, श्रीमती माग्रेट अलवा, भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति भ्राता बी.डी. जती जी तथा राज्यों के अनेक मंत्री शामिल हैं।

इस अभियान में जनसमूह भाग ले इस बात को आगे रखकर देश के कोने-कोने में समारोह आयोजित किये गए। आंध्रप्रदेश में रय-

शेष पृष्ठ ४ पर

यात्रा—कम्युनिस्ट देशों की !

गत मास मुझे जर्मनी व कुछ अन्य देशों में सेवा के लिए बुलाया गया था। इस यात्रा में हंगरी और पोलैंड भी सम्मिलित थे। ये दोनों कम्युनिस्ट देश हैं। दोनों देशों में सेवाकेंद्र पर आनेवाले भाई-बहनों की तों सेवा करने का प्रयास किया ही परंतु उनके अतिरिक्त वहां के कुछ विशिष्ट लोगों से भी मिलने का अवसर प्राप्त हुआ तथा कुछेक सार्वजनिक कार्यक्रमों में भी भाग लिया। पोलैंड देश की राजधानी वारसा में एक स्थान पर मुझे पुनर्जन्म पर भाषण करना था। वहां की सभा में शायद कुछ लोग पुनर्जन्म में बोड़ी-बहुत आस्था भी रखते होंगे। वहां पर भी लगभग २००-२५० लोग उपस्थित थे। दूसरा भाषण वहां के विश्वविद्यालय ने निश्चित किया हुआ था जिसका विषय था—'विश्व का नव-निर्माण (World Renewal)। उसमें कुछ प्रोफेसर और कुछ स्नातकोत्तर श्रेणी (Post Graduate Level) के विद्यार्थी सम्मिलित थे। यह भाषण वहां के दर्शन विभाग के मुख्य आचार्य के सभापतित्व में होना था। सुननेवाले बहुधा कम्युनिस्ट ही थे। उनमें से कुछेक ज़रूर ईसाइ मत के माननेवाले भी होंगे। स्वाभाविक तौर पर ये दोनों ही प्रकार के लोग अपने-अपने मन्तव्य वाले थे और राजयोग को वे ईश्वरवादी तथा मुख्यतः हिंदूमत से सम्बंधित एक सम्प्रदाय समझते थे। इन दोनों भाषणों का अनुवाद उस देश की भाषा में साथ-साथ ही किया गया। दोनों स्थानों पर प्रवचन के बाद उन्हें थोड़ा ईश्वरीय स्मृति व आत्मिक स्थिति (Meditation) का अभ्यास वहां की सेवाकेंद्र की बहन ने कराया।

यहां विश्वविद्यालय में भाषण करने से पहले मैं सोचता था कि एक कम्युनिस्ट देश में भाषण करने का मेरा यह पहला ही अवसर है। अब इनको विश्व नव-निर्माण के विषय पर यह तो बताना ही होगा कि पहले कभी सतयुग था और अब फिर कलियुगी मनुष्यों को बदलकर सतयुग की पुनर्स्थापना करना ही विश्व का नव-निर्माण करना है। यह भी बताना ही होगा कि इस कलियुग की सभी समस्याओं का यदि विश्लेषण किया जाए तो हम इसी परिणाम पर पहुंचेंगे कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और आलस्य ही इन समस्याओं के वृक्ष की मुख्य शाखाएँ हैं और इनका मूल है देह-अभिमान अथवा आत्म-विस्मृति। अतः यद्यपि ये लोग आत्मा के विषय में आस्था नहीं

रखते तथापि दर्शन के विद्यार्थी तथा अध्यापक होने के नाते और वैसे भी इन्हें सत्यता का परिचय देने के अभिप्राय से यह तो बताना ही होगा कि जब मनुष्य यह भूल जाता है कि वास्तव में वह एक ज्योतिस्वरूप आत्मा है और जब उसका परमपिता परमात्मा से रूहानी नाता भी टूट जाता है, तभी संसार में दुख और अशांति प्रवेश करते हैं। सभा में एक ही भाषण होना था, इसलिए घंटा-सवा-घंटा में मैंने उन्हें इस विषय पर ईश्वरीय ज्ञान का बोध कराने का यत्न किया। साथ-साथ मैंने कहीं-कहीं बाइबल से भी उदाहरण दिये और कम्युनिज्म के जन्मदाता कॉर्ल मार्क्स के मूलमंत्रों की भी चर्चा की। उदाहरण के तौर पर यह कहा कि बाइबल में भी लिखा है कि पहले यह संसार एक पैराडाइज़ (Paradise) था। यहाँ एक ही भाषा थी, एक ही धर्म था, कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं था। पाश्चात्य देशों के दार्शनिक विचारों के मूल-स्रोत यूनानी लेखकों के विचारों के भी हवाले मैंने दिये ताकि कहीं ऐसा न हो कि इनमें बैठे हुए कुछ ईसाई लोग यह सोचकर भड़क उठें कि यह हमें हिंदू बनाना चाहता है। परंतु साथ-ही-साथ मैंने यह भी उन्हें बताया कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का नया जीवन-दर्शन क्या है और किस प्रकार वह विवेक-युक्त और तर्क-सम्मत है।

कम्युनिज्म की चर्चा करते हुए मैंने उन्हें कहा कि इस वाद में मनुष्य मात्र का ध्यान गरीबों के शोषण की ओर खिंचवाया है और इस अर्थ में एक अच्छी सेवा की है। परंतु मार्क्सवाद कोई सम्पूर्ण जीवन-दर्शन नहीं है। वह जीवन के सब पहलुओं पर प्रकाश नहीं डालता। वो अपने ढंग-से इतिहास का एक नया विश्लेषण देते हुए एक नयी आर्थिक-व्यवस्था पेश करता है और इस मान्यता पर आधारित है कि इससे सभी कष्ट और क्लेश मिट जायेंगे। परंतु आर्थिक पक्ष तो जीवन के अनेक पक्षों में से एक पक्ष है; उसे हल करने से मानवी जीवन के सभी सवाल हल नहीं हो जाते। मैंने कहा कि यदि हम इस प्रश्न को छोड़ भी दें कि कॉर्ल मार्क्स ने इतिहास का जो विश्लेषण किया, वह पूर्णतया ठीक था या नहीं तो भी पिछले लगभग ५० वर्षों का इतिहास इस बात का साक्ष्य है कि केवल रोटी और रोजगार मिल जाने से ही मनुष्य संतुष्ट नहीं हो जाता और कि इस वाद द्वारा भी गरीबी अथवा निम्न आर्थिक स्तर की समस्या का

पूर्णतः हल नहीं हो पाया । मैंने उन्हें यह भी बताया कि भले ही इस बात में कम्युनिज़्म का अपना कोई दोष न हो या उनके वाद अथवा सिद्धांत में कोई त्रुटि न हो परंतु सभी जानते हैं कि साम्यवाद के बाद विश्व में न केवल हिंसात्मक संघर्ष बढ़ा है बल्कि विश्व दो भागों में बंट गया है और विश्व में दो शक्तिशाली गुट, जो एक-दूसरे का सामना करने के लिए सैनिक तैयारी कर रहे हैं, उससे सारे विश्व के अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो गया है । विश्व से गरीबी खत्म करने की बजाए विश्व ही का खात्मा करने की तैयारी हो रही है । यह तो ठीक वैसे ही है कि रोग को मारने की बजाए रोगी को ही मार दिया जाए ।

श्रोतागण को यह भी बताया गया कि कम्युनिज़्म की एक सबसे बड़ी कमी यह है कि वह आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व को ही नहीं मानता जबकि दार्शनिक विधि से यह बात स्पष्ट की जा सकती है कि आत्मा का अस्तित्व है । आज के मस्तिष्क विज्ञान व मनोविज्ञान से भी यह बात स्पष्ट होती है कि न केवल आत्मा का अस्तित्व है परंतु वह अमर भी है । संसार के भौतिक पदार्थों का भोक्ता तथा उनके अस्तित्व का ज्ञाता भी आत्मा ही है और उसके बिना भौतिक पदार्थों और साधनों का अस्तित्व भी निष्प्रयोजन और निरर्थक ही हो जाता है । इस संदर्भ में उन्हें मस्तिष्क विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार लेनेवाले कुछ वैज्ञानिकों की सम्मतियां भी दी गईं तथा कुछ तर्क भी प्रस्तुत किये गये जो इस बात का समर्थन करते थे कि आत्मा है ।

उन्हें यह बताया गया कि स्वयं को आत्मा माने बिना तथा अन्य को भी आत्मा समझे बिना न तो विश्व-भ्रातृत्व की भावना कायम हो सकती है और न ही शोषण का अंत हो सकता है और ये न होने से एक नये समाज अथवा विश्व का नव-निर्माण भी नहीं हो सकता । अतः अब विश्व को एक रूहानी कम्युनिज़्म (Spiritual Communism) की आवश्यकता है क्योंकि वर्तमान समय के कम्युनिज़्म में यद्यपि गरीबों के प्रति सहानुभूति का सद्गुण है तथापि उसमें रूहानी भ्रातृत्ववाद, अहिंसा और योग द्वारा शांति का अभाव है जिसके परिणामस्वरूप विश्व में तनाव, आतंकवाद (Extremism), अस्त्रों की दौड़ (Weapons Race) इत्यादि को बढ़ावा मिला है । जैसे कम्युनिज़्म में आध्यात्मिकता का अभाव है वैसे ही पिछले दो-दोई हज़ार वर्षों से चले आ रहे धर्मों में साम्यवादी दृष्टिकोण (Communistic Spirit) का अभाव रहा है जिसके कारण उनमें जाति-पाति, अपशुनवाद (Superstitions), निरर्थक रस्मों का बाहुल्य, पण्डे-पुजारियों, मुल्ला-मौलवियों, और प्रीस्ट-पाँदरियों या

गुरु-गुसाइयों का दबदबा बना रहा है ।

उनका ध्यान कॉल मार्क्स के दो मौलिक और महत्वपूर्ण वाक्यों की ओर खिंचवाया गया जिनमें से एक में कहा गया है कि "हर कोई अपना योग्यता के अनुसार कार्य करेगा और उसे उसकी आवश्यकता के अनुसार चीज़ें मिलेंगी" ("Each will work according to his abilities and get according to his needs") और दूसरे में यह कहा गया है कि "संसार के मज़दूरों, तुम एकजुट हो जाओ; इससे आपकी कोई हानि नहीं होगी; हाँ, आपके सब बंधन कट जायेंगे" ("Labourers of the world, Unite; You are going to lose nothing but chains) उन्हें यह बताया गया कि इससे मिलते-जुलते सिद्धांत अथवा वाक्य रूहानी कम्युनिज़्म (Spiritual Communism) के हैं । उनमें से एक तो यह है कि "हर कोई परमात्मा के प्रति समर्पण भाव से विश्व को एक कुटुम्ब मानते हुए यथा-शक्ति काम करे तथा यथा योग्य योगदान दे और वह यथा आवश्यक भौतिक साधनों को पाये" ("Each one will work with a spirit of self surrender to God and dedication to human family and will get according to his needs) और दूसरे में कहा गया है; "संसार के लोगो, तुम आत्मिक रूप से परमात्मा के साथ एकजुट हो जाओ । इससे आपकी कोई हानि नहीं होगी । हाँ, आपके सब कर्म-बंधन और मानसिक बंधन कट जायेंगे" ("People of the world, Unite, as souls, with God and you will lose nothing but the chains of your past Karmas and your present mental linkages) उन्हें बताया गया कि भारत का राजयोग इस प्रकार का ही रूहानी कम्युनिज़्म (Spiritual Communism) है जो निर्धनता को अंततोगत्वा निर्मूल कर देता है । वर्तमान समय निर्धनों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करता है । जाति-पाति के भेद को मिटा देता है । हर मनुष्य को आत्मिक प्रेम के सूत्र में लाते हुए विश्व में भाईचारा पैदा करता है । सद्गुणों का विकास करता है । मनुष्य को नेक चलन बनाता है । मनुष्य को आत्मा के स्वरूप में स्थित करके दुखरूपी घट वृक्ष के देहाभिमान रूपी मूल को ध्वस्त करता है और मनुष्य के मन का नाता परमात्मा से जोड़कर उसे तनाव, आतंकवाद और अनेक प्रकार की मानसिक गुलामियों और सांस्कारिक दासता से छुड़ाता है और इस प्रक्रिया से एक नये समाज अथवा नये विश्व का निर्माण करता है जिसे हम सतयुग कहते हैं । यही कार्य यह ईश्वरीय विश्वविद्यालय कर रहा है ।

—जगदीश

'स्वर्णिम प्रभात अब आएगा'...

□ ब्रह्माकुमार प्रकाश मीपाल

स्वर्णिम प्रभात अब आएगा

भारत का भाग्य जगाएगा

दानवता का तम भागेगा

जग में उजियारा छाएगा।

सैतोष शील प्लावित मन में,

नेह भरा होगा जन-जन में।

शांति सुधा फिर बरसेगी

घन बनकर जन जीवन में।

कण-कण पावन बन जाएगा,

स्वर्णिम प्रभात अब आएगा...।

स्नेहलता पल्लवित होगी,

हर डाली के फिर हृदय मिलेंगे।

भ्रातृत्व भाव तब फलित होगा,

एकत्व-समत्व के फूल खिलेंगे।

जग उपवन सा महकाएगा,

स्वर्णिम प्रभात अब आएगा।

सत्य अहिंसा की फिर जय होगी,

मानवता सुखमय निर्भय होगी।

प्रकृति सेवक बन जाएगी

देवी सृष्टि उदय होगी।

पिक कोकिल के मधुरिम गानों से,

सागर की छलकल तानों से।

मन सबका खूब हर्षाएगा,

स्वर्णिम प्रभात अब आएगा...।

दुर्भावनाओं का अंत होगा,

जीवंत होगी शुभभावना।

विचारों की एकता-पवित्रता से

स्वतः पूर्ण होगी हर कामना।

यह भारत स्वर्ग कहलाएगा,

स्वर्णिम प्रभात अब आएगा...।

यात्रा निकाली गई, बाइसिकल यात्रा, बस यात्राएं तथा पदयात्राएं भी निकाली गई।

युवा वर्ग पर विशेष ध्यान दिया गया। तदनुसार शिक्षा-विभाग, युवा संगठनों, नेशनल केडेटकोर इत्यादि को इस अभियान में भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया। परिणामस्वरूप शिक्षण-विभाग ने सर्कुलर जारी किए। प्रसार साधनों ने भी इस अपील के प्रचार में खूब योगदान दिया। २२५ बार अखबारों में छपा, रेडियो में १६ बार, समाचार प्रसारण हुए। टी.वी. में ८ बार समाचार प्रसारित हुए। फिल्म डिवीजन भी २ न्यूजरील तैयार कर रहा है।

कुल भारत में १५, ५४, ७५, २५१ शांति के मिनिट्स संग्रह किए गए।

१६ अक्टूबर को नयी दिल्ली में गांधी मेमोरियल हॉल में निर्णायक समारोह किया गया। न्यायमूर्ति एम.एम. दत्त, स्वामी वेदान्तानंदजी, श्रीमती अंजना कंवर, उपमहापौर देहली, न्यायमूर्ति एम.एच. बेग, मारीशियस के हाई-कमिश्नर, न्यायमूर्ति टी.वी.आर टाटाचारी, लोकयुक्त हि.प्र.ने शांति संदेश दिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता दादी प्रकाशमणि जी ने की। दादी जी को शांति के मिनिट्स एक रंग-बिरंगे फ्रेम किए चित्र द्वारा भेंट किए गये। इस चित्र में शांति की चिह्निया तथा भारत का नक्शा दिखाया गया था। इस कार्यक्रम को आकाशवाणी तथा भारत के मुख्य समाचारपत्रों ने कवर किया। □



घाटकोपर (बम्बई): विश्वशांति संदेश पदयात्रा का उदघाटन शांतिदूत उड़ाकर करते हुए भ्रता राज इंस्येक्टर भालेराव जी।

मीठे बच्चे अब समय प्रमाण अपने में योग की इतनी शक्ति भरो कि आप वातावरण को बदल सको न कि वातावरण आपको बदले!

शुभ दीपावली !

□ले.-ब्रह्माकुमारी सुधा, शक्ति नगर., दिल्ली

भारत देश त्यौहारों का देश है। भारत देश में मनाया जानेवाला प्रत्येक त्यौहार अपनी विशेषताओं के कारण सार्थक है। भारतीय संस्कृति के आदर्शों की झलक इन त्यौहारों में मिलती है। एक ओर तो ये त्यौहार जन-जन के हर्षोल्लास और उत्साह के परिचायक हैं क्योंकि उत्सव का अर्थ ही है उत्साह वर्द्धन करनेवाला और दूसरी ओर ये भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने में सहायक हैं। इसलिए भारतवासी—सभी वर्ग, सभी सम्प्रदाय, सभी जातियाँ—इन त्यौहारों को बहुत ही धूमधाम से मनाते हैं। परंतु उमंग-उत्साह बढ़ानेवाले इन उत्सवों को आज केवल स्थूल रूप से ही मनाने की प्रथा चल रही है और शायद इसीलिए ही ये उत्सव आज उतना हर्ष व आनंद प्राप्त कराने में सक्षम नहीं रह गये। इन उत्सवों के पीछे छिपे गहन आध्यात्मिक रहस्यों को हम भूल गये हैं। जिनको जानने से ही, न केवल जानने से वरन् उन्हें अपने जीवन का एक अंग बनाने से हमारे जीवन में दीर्घकाल के लिए हर्ष, उत्साह व आनंद बना रह सकता है।

ऐसा ही एक त्यौहार है—दीपावली ! यह पर्व कार्तिक-मास की अमावस्या को मनाया जाता है। अमावस्या की इस अंधेरी रात को घर-घर में, स्थान-स्थान पर दीपक जगाकर पूर्णिमा की रात में बदल दिया जाता है। दीपावली से एक दिन पहले अर्थात् कार्तिक-मास के कृष्ण पक्ष की चौदहवाँ रात को नरक चौदस अथवा छोटी दीवाली कहते हैं। कहते हैं कि इस दिन श्रीकृष्ण ने कामी नरकासुर का वध किया था। एक पौराणिक कथा के अनुसार ऐसा भी कहा जाता है कि इसी दिन भगवान नरसिंह ने अवतार लेकर भक्त प्रह्लाद के पापी पिता हिरण्यकश्यपु का वध किया था। रामायण के अनुसार ऐसा भी प्रसिद्ध है कि इसी दिन श्रीराम अपने चौदह वर्ष का वनवास पूराकर सीता व लक्ष्मण सहित अयोध्या वापस लौटे थे, और इस खुशी में अयोध्यावासियों ने घर-घर में घी के दीप जगाए थे। इस प्रकार के अनेक आख्यान इस उत्सव से जुड़े हुए हैं।

इन आख्यानों के साथ-साथ इस त्यौहार के साथ जुड़ी हैं कुछ रस्में। जैसे इस दिन गरीब हों या अमीर—अपने-अपने घर में दीपक, मोमबतियाँ या आज के इस आधुनिक युग में बतियों की लड़ियाँ ज़रूर जलाते हैं। दीपावली आने के कुछ

दिन पूर्व ही घर की अच्छी तरह से सफाई की जाती है और बच्चे, बूढ़े, जवान दीवाली के दिन अपने सुंदर वस्त्रों से अपने को सजाकर रात्रि को लक्ष्मी पूजन करते हैं। साथ-साथ अपने मित्रों, सम्बन्धियों तथा नातेदारों को शुभ दीपावली की बधाई देते हुए मुख भी मीठा कराते हैं।

परंतु आप देखेंगे कि आज इस त्यौहार का भी केवल बाहरी और स्थूल रूप ही हमारे सामने आता है। घर-घर में दीपक तो जग जाते हैं पर मन में तो अंधेरा ही रहता है। घर, दुकान, मकान की सफाई तो कर ली जाती है परंतु आत्मा तो मैली ही रह जाती है और इसीलिए लक्ष्मी पूजन तो होता है लेकिन श्रेष्ठ लक्ष्य की सिद्धि तो होती नहीं अर्थात् धन होते भी मनुष्य संतुष्ट व खुश तो होता नहीं। अल्पकाल के लिए भुख तो मिठाई से मीठा करा दिया जाता है पर जीवन में मधुरता का गुण तो आता ही नहीं। अतः इस उत्सव के साथ जुड़े आख्यानों का आध्यात्मिक रहस्य अगर हमें समझ में आ जाए और हमारे जीवन का वह एक अभिन्न अंग बन जाए तब दीवाली 'शुभ दीपावली' होगी।

उदाहरण के तौर पर यह आख्यान कि इस दिन श्रीकृष्ण ने कामी नरकासुर का वध किया था। इसका भावार्थ वास्तव में यह है कि काम विकार ही नरक का द्वार है। कामी मनुष्य एक असुर की तरह ही है क्योंकि यह काम की आसुरी वृत्ति आत्मा की श्रेष्ठ पवित्र स्थिति का हनन करती है। अतः आकर्षण मूर्त परमात्मा की श्रीमत् पर चलकर जब हम इस काम की आसुरी वृत्ति अर्थात् कामी नरकासुर का वध करते हैं तभी आत्मा की ज्योत जगती है, मन का अधकार मिटता है और तभी जीवन में उजियारा हो जाता है।

इसी प्रकार दूसरे प्रसिद्ध आख्यान कि इस दिन नरसिंह अवतार ने भक्त प्रह्लाद के पापी पिता हिरण्यकश्यपु का वध किया था का भी यही भावार्थ है कि परमात्मा में लगन लगानेवाली आत्माओं के आगे उनकी लंगन की अग्नि को बुझाने के लिए आसुरी वृत्तियाँ विघ्न बनती हैं परंतु ईश्वरीय ज्ञान के बल पर जब हम उन आसुरी लक्षणों का संहार कर देते हैं तब

शेष पृष्ठ ८ पर



ब्रह्माकुमारी दादी कुमारका

“कुमारों के साथ दादी कुमारका”

□ ब्र.कु. आत्मप्रकाश, आबू पर्वत द्वारा प्रेषित

इस वरदानी वर्ष में ईश्वरीय प्रेरणानुसार राजयोगिनी दादी कुमारकाजी ने सभी कुमारों को मधुवन तपस्या भूमि पर विशेष तपस्या करने अर्थ आमंत्रित किया था। तपस्या भट्टी का निमंत्रण मिलते ही हर्षोल्लास से सभी दौड़े-भागे मधुवन पधारे और भट्टी में सम्मिलित हुए। जिसमें उन्होंने बहुत ही सुंदर अनोखे अलौकिक अनुभव किए। दादीजी के साथ ज्ञान-चर्चा करने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त हुआ। दादीजी के अद्भुत ओजस्वी वाणी से कुमारों में नये उमंग की लहर छा गई थी। उन्हीं के मन में कई तरंगें उत्पन्न हुईं, जिसकी चर्चा खुलेदिल से दादीजी के साथ की। वार्तालाप के उपरांत उन्हीं के मन से यही आवाज़ निकली कि— “दादीजी, सचमुच आपने तो हमारे दिल में बिजली भर दी। आपके ये अनमोल शब्द मायाजीत बनने के लिए हमें सदा साथ देंगे।” उन्हीं की आपस में चली हुई ज्ञान-चर्चा पाठकों के लाभार्थ यहां प्रस्तुत कर रहे हैं:—

- प्र. दादीजी, आपका विशेष कुमारों से स्नेह क्यों है ?
- उ. वैसे तो हमारा सभी ब्रह्मावत्सों से ही अति स्नेह है, परंतु कुमार इस संसार के बहाव में बहने से बच गये। उनका जीवन निश्चय ही त्याग-से भरा है, वे सेवा में भी पूर्ण-रूपेण समर्पित भाव से योगदान करते हैं। इसलिए उन्हीं से स्नेह होना स्वाभाविक ही है और वैसे भी कुमारों को ईश्वरीय स्नेह की नितांत आवश्यकता है।
- प्र. दादीजी, कुमारों का जीवन श्रेष्ठ क्यों गाया हुआ है ?
- उ. कुमार अर्थात् (कुमार) बुराइयों को मारनेवाला। जो स्वयं के तथा दूसरों की बुराइयों को खत्म करता है वह

वास्तव में ही श्रेष्ठ है। कुमार पूर्ण रूप से सेवाओं में स्वतंत्र रूप से भाग लेते हैं। कई कुमार बड़े ही निर्मल स्वभाव के हैं, उनमें आगे बढ़ने की तीव्र भावना है, वे जीवन में कुछ कर लेना चाहते हैं। वास्तव में वे ही ईश्वरीय सेवा के दृढ़ स्तम्भ हैं।

- प्र. दादीजी, आपके जीवन में नेतृत्व शक्ति कैसे आई ?
- उ. मैंने इसके लिए कोई विशेष पुरुषार्थ नहीं किया। लेकिन शुरू से ही मेरा यही लक्ष्य रहा कि मुझे बापदादा को फालो करना है और बाप-समान बनना है। जिससे मेरे जीवन में साहस और दृढ़ता बढ़कर नेतृत्व शक्ति आने लगी। इसके लिए सबके दिलों को जितना परमावश्यक है। तथा सभी के प्रति स्नेह तथा समानता की भावना हो।
- प्र. दादीजी, आपने बाबा का दिल जीतने के लिए कौन-सा पुरुषार्थ किया ?
- उ. प्यारे बाबा ने बताया कि— “मैं सत-बाप, सत-शिक्षक और सतगुरु हूँ और मेरी श्रीमत् पर चलने से तुम श्रेष्ठ बनोगे।” तो सत्यता मुझे सदा प्रिय थी। इस सत्यता की शक्ति से ही मैं बाबा का दिल तख्तानशीन बनती गई। मेरा सदा यही लक्ष्य रहता था, जो 108 की वैज्यंती-माला है, उसमें नंबरवन लेना है जिससे सदा बुद्धि में एक बाबा ही रहता था। क्योंकि जितना हम बाबा को अपने दिल में समाते हैं, उतना ही बाबा का दिल जीतते थे।
- प्र. दादीजी, इतने बेहद कारोबार में व्यस्त होते भी सदा रूहानी मस्ती में रहने के लिए आप कौन-सा गुप्त पुरुषार्थ करती हैं ?
- उ. सबसे पहली बात: तो मैं सदा स्वयं को निर्मित समझती हूँ। सदा यही भाव रहता है कि बाबा जिम्मेवार बैठे हैं। यह निमित्त-भाव मुझे सदैव हल्का रखता है।
- दूसरी बात: इस बेहद के सुंदर डॉमा के विभिन्न दृश्यों को साक्षी होकर देखती रहती हूँ जिससे बाबा को

सदा अपने साथ साथी के रूप में अनुभव करती हूँ।

तीसरी बात: सदा ध्यान रखती हूँ कि मुझे संकल्प या शक्ति को वेस्ट नहीं करना है, उसके लिए 'नथिंग न्यू' का पाठ पक्का करते हुए सभी को मनसा-शक्ति का सहयोग देती रहती हूँ।

तो उपरोक्त बातों के अभ्यास से बहुत सुंदर स्थिति सदा बनी रहती है।

प्र. दादीजी, अनुशासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए आप विशेष कौन-सी बातों पर ध्यान देती हैं ?

उ. मैं सदा धैर्य, शांति व स्नेह के साथ सभी के प्रति सदा शुभ-भावनाएं रखती हूँ। सदा बुद्धि में युनिटि को रखते हुए जितना हो सके हर आत्मा को संतुष्ट रखने का प्रयास करती रहती हूँ। क्योंकि जो सदा स्वयं से संतुष्ट रहकर सच्चे दिल से बाबा की सेवा करते हैं वो स्वतः ही प्रभु-पसंद और विश्व-पसंद बनते हैं। **दूसरी बात,** मैं सदा लव और लां का बेलैस रखती हूँ जिससे अनुशासन स्वतः ही निर्विघ्न रीति-से चलता रहता है।

प्र. दादीजी, क्या नये कुमार भी इस आध्यात्मिक रेस में आगे जा सकेंगे ?

उ. हाँ, क्यों नहीं, वैसे भी बाल-ब्रह्मचारियों का गायन तो सदा होता ही है। अगर मनसा, वाचा से सदा अंतर्मुखी रहकर दृढ़ता-से पुरुषार्थ करते रहेंगे, तो अपनी वृत्ति पर भी नियंत्रण कर सकेंगे। परिणामतः सदा स्वच्छ तथा दूरदेशी बुद्धि से विचार सागर मंथन करके सदा एक बाबा से बुद्धियोग जुटाकर शक्तियाँ लेते रहेंगे। ऐसे कुमार स्वयं को हर संघर्ष से बचाकर अपने चारों सब्जेक्ट्स का बेलैस रखते हुए तेज़ी-से आगे जा सकते हैं।

प्र. दादीजी, सदा टकराव से कैसे बचे रहें ?

उ. वास्तव में देह-अभिमान के कारण जो अपने को राव समझते हैं, वो ही टकराव में आते हैं। सदा जीवन की इमारत सरलचित्त को दृढ़ नींव पर टिकी हो। जहाँ एक-दो के विचारों को समझकर व्यवहार किया जाता है और परस्पर स्नेह व सहयोग की भावना होती है वहाँ टकराव हो नहीं सकता। इसके लिए विशेष ज़िद और सिद्ध करने के संस्कार को मिटाना बहुत ही ज़रूरी है।

प्र. दादीजी, ज़िद और सिद्ध करने के संस्कार को कैसे मिटाएं ?

उ. ज़िद और सिद्ध करने का संस्कार सूक्ष्म अहंकार का प्रतीक

है और ये सिद्ध करने का संस्कार हमें सिद्धि-स्वरूप बनने से वंचित रखता है। इस सूक्ष्म अहंकार की बीज है देह-अभिमान का कड़ा संस्कार। जैसे-जैसे इस कड़े संस्कार को भस्म करने के लिए बीजरूप शिवबाबा को याद करते हैं तो स्वतः रूहानियत की शक्ति बढ़ती जाती है। इस शक्ति से ही आत्मा अपने शांत, शीतल तथा सरलता जैसे निजी गुणों को अपनाती है। जिससे यह ज़िद और सिद्ध करने का विकृत संस्कार सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

प्र. दादीजी, कभी-कभी जीवन में अकेलापन महसूस होता है, उस समय क्या करें ?

उ. ऐसे समय अपने परम साथी, परम-मित्र शिवबाबा को ही अपना सच्चा साथी बनाया जाए। उससे ही सर्व रस प्राप्त करने का दृढ़-संकल्प किया जाए। संसार से कुछ प्राप्त करने की इच्छा ही अकेलापन लाती है। इसलिए सदा नयनों में बाबा, बुद्धि में बाबा रखें तो अकेलापन महसूस नहीं होगा और दूसरा बेहद की सेवा को भी साथी बनाएँ। क्योंकि अकेलापन तब महसूस होता है जब सेवा में बुद्धि नहीं होती या पढ़ाई पर ध्यान नहीं होता या बाह्यमुखता में चले जाते। अगर इन तीनों बातों पर ध्यान दें तो अकेलापन महसूस नहीं होगा।

प्र. दादीजी, अगर हम कभी बीमार पड़ते हैं, तब हमें किसी का सहयोग प्राप्त नहीं होता तो निराशा के शिकार बन जाते, तब क्या करें ?

उ. ये तो मैं हमेशा कहती हूँ कि यह हमारा ईश्वरीय परिवार है, पांडवों का काम है ज़रूरत अनुसार सहयोग लेना या देना। दूसरी बात, हमें बीमारी में ईश्वरीय सहयोग लेने का अनुभव होना चाहिए। बाबा की याद से उनको पूर्ण सहयोग मिल जाता है। सदा मन में यही संकल्प रहे कि हमें तो सर्वशक्तिवान सदा मदद कर रहा है, वही मेरा सच्चा सहायक है। तो जीवन में कभी भी निराशा नहीं आयेगी।

प्र. दादीजी, जीवन में सदा उमंग-उल्लास कायम रखने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

उ. पवित्रता की शक्ति को बढ़ाएँ, क्योंकि उमंग कम होने का कारण है पवित्रता की कमी। इसलिए आत्मा का पाठ पक्का करके आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति को पवित्र बनाकर सदा पवित्र जीवन के नशे में रहें।

दूसरी बात: मनन-शक्ति बढ़ाएँ, क्योंकि ज्ञान का

मनन करते रहने से सहज मग्नावस्था बनती है। साथ-ही-साथ बुद्धि में ज्ञान के नये-नये बिंदू टपकते रहने से अथाह खुशी होती है जिससे सदा उमंग कायम रहता है।

तीसरी बात: कुमार अपना चॉर्ट बनायें। अपनी दिनचर्या निश्चित करें। जीवन में सेवा करते समय ज्ञान व योग का भी पूर्ण संतुलन हो। सिर्फ सेवा का ही स्वरूप बने रहने से धीरे-धीरे आत्मा उलझन महसूस करने लगती है। अतः नये-नये उमंगों के लिए नयी-नयी योजनाएं बनाएं।

प्र. दादीजी, बाबा ने इस 86 वर्ष में विशेष कठोर तपस्या करने के लिए प्रेरणा दी है, इसका गुह्य राज क्या है ?

उ. इस वर्ष स्वर्ण जयंति निमित्त हम बच्चों की स्थिति भी स्वर्ण अर्थात् सच्चे सोने जैसी सतोप्रधान बनाने के लिए बाबा ने तपस्या करने के लिए प्रेरणा दी है।

वैसे तो बाबा त्रिकालदर्शी हैं, बच्चों को समय के पहले सर्व-खजानों से सम्पन्न बनने के लिए इशारा दे रहे हैं। क्योंकि हम देखते हैं दिन-प्रतिदिन दुनिया की हालत गम्भीर बनती जा रही है। भविष्य में माया भयानक रूप से आत्माओं पर वार करेगी। उस समय मायाजीत बनने के लिए शक्तिशाली स्थिति बनाना परमावश्यक है, क्योंकि "जहां होगी योग की ज्वाला, वहां न करेगी माया हमला।"

इसलिए तपस्या में तपकर हमें बाबा के खजानों को हप करना है अर्थात् स्वयं को भरपूर करना है।

प्र. दादीजी, अगर किसी कारण से कोई अपमान करता है, उस समय स्थिति एकरस कैसे रखें ?

उ. अगर कोई हमारा अपमान करता है तो उसका कारण है पिछले जन्मों का हिसाब-किताब। उस समय याद रखो कि हमें तो स्वयं भगवान सम्मान दे रहे हैं। आत्माओं का मान-सम्मान हमें संतुष्ट नहीं कर सकता। यदि स्वमान में रहेंगे तो अपमान का असर नहीं होगा। ऐसे एकरस स्थिति वाले आत्माओं को अंत में धर्मराज से भी सम्मान मिलेगा।

प्र. दादीजी, देश-विदेश के सभी कुमारों के प्रति आपका क्या संदेश है ?

उ. हे कुमारो— "हनुमान के समान अपने दिलरूपी मंदिर में निराकार राम 'शिव' को अविनाशी याद के रूप में

बसाकर देह-अभिमान की पूंछ योगाग्नि से जलाकर इस विकार रूपी रावण की लंका को जलाओ और हर एक के मन में परमात्म प्यार का दीपक जगाओ।"

□ हे कुमारो, तपस्वी कुमारो, अपने तपस्या के बल से समस्याओं के चक्की में पिसनेवाली कमजोर आत्माओं को बल प्रदान करके बलवान बनाओ।

□ हे कुमारो, शांतिदूतो, शांति के झरने बनकर हर अशांत आत्मा की शांति की प्यास बुझाकर विश्व में शांति स्थापन करने के महान कार्य में अपना सर्वस्व बलिदान करो।

□ हे कुमारो, परमात्मा के सुपुत्रो, अपनी ऊंच धारणाओं से आदर्श कुमार के रूप में प्रेरणास्रोत बनकर करोड़ों आत्माओं को श्रेष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करते हुए शिव पिता को प्रत्यक्ष करने के लिए अपना हर श्वास और संकल्प सफल करो।

इसी प्रकार कुमारों की सेनानी दादी कुमारकाजी के वरदानी बोल सुनकर सभी कुमारों के मन में नयी चेतना जागृत हुई। अंत में विश्व के बापू शिव परमात्मा की शांति स्थापना करने की चाहना पूर्ण करने का वायदा करते हुए और दादीजी को लाख-लाख शुक्रिया देते हुए सभी ने विदाई ली। □

पृष्ठ ५ का शेष

शुभ दीपावली !

आत्म-दीप प्रज्वलित हो उठता है। आत्मा की मैल धुल जाने से उसका सत्य स्वरूप निखर जाता है।

अतः दीपावली वास्तव में आसुरीयता पर विजय पाने, आत्म-दीप जगाने का उत्सव है। जब एक दीपक से अनेक आत्म-दीपक जग उठते हैं तो घर-घर में दीपावली (दीपावली अर्थात् दीपों की पंक्ति) हो जाती है। तब इस सृष्टि पर सतयुगी संवरा होता है जहां चेतन लक्ष्मी का राज्य होता है। जन-जन धन-धान्य से सम्पन्न होता है। न केवल स्थूल धन परंतु गुणों का धन भी जिससे जीवन मधुर (मीठा) व हर्षित हो जाता है और यही दीपावली 'शुभ दीपावली' है।

आइये, आज हम यह प्रतिज्ञा करें कि दीपावली का उत्सव न केवल स्थूल स्वच्छता, सुख व सम्पन्नता को लानेवाला हो परंतु साथ-साथ मानसिक स्वच्छता, आत्मिक सुख तथा चारित्रिक सम्पन्नता को भी लानेवाला हो। □

कोई शिखर पे कोई भँवर में

□ जी.के. सूरज कुमार, आबू

नीरज और पंकज दोनों बहनें राजयोग का अभ्यास करती हैं। दोनों की अनुभव-युक्त परिचर्चा यहाँ प्रस्तुत है।

पंकज—ओमशांति, नीरज बहन...

नीरज—ओम शांति, कहो पंकज किस गति से अपनी मंजिल की ओर बढ़ रही हो ?

पंकज—ठीक है, गति तो ठीक है, परन्तु उतनी नहीं, अभी मंजिल दूर लगती है।

नीरज—क्यों पंकज ऐसा क्यों ? जीवन ही बलिदान कर दिया तो मंजिल पाने के सिवाय और रह ही क्या गया। यदि सब कुछ त्याग कर भी मंजिल से दूर ही रहे तो बेचारे गृहस्थियों का क्या होगा। वे तो हमें उलहना ही देंगे कि आप ही लक्ष्य पर नहीं पहुँच पाये तो भला हम कैसे पहुँचते।

पंकज—ठीक है, परन्तु सेवा के अनेक झंझट... उनमें कभी-कभी आत्म-संतोष प्राप्त नहीं होता।

नीरज—सेवा तो सब कर ही रहे हैं और करनी ही है। देखो जो महान आत्माएँ अनेक वर्षों से इस यात्रा पर चल रही हैं, सेवाएँ तो उन्होंने भी बहुत की हैं।

पंकज—परन्तु नीरज बहन, उनमें भी कोई तो बहुत आगे निकल गये हैं, परन्तु कोई तो बहुत पीछे नज़र आते हैं।

नीरज—ठीक है... यह तो अपनी-अपनी बुद्धि, अपने-अपने त्याग और अपनी-अपनी धारणाओं पर आधारित है। समय चाहे किसी ने कितना भी लिया हो, वास्तव में इसका महत्व नहीं है, महत्व तो इसका है कि उन्होंने इतने समय में क्या किया।

पंकज—आप तो नीरज बहन, प्रत्येक बात का विश्लेषण करती हैं। आपने ज़रूर सोचा होगा कि गिने-चुने लोग इतने आगे क्यों बढ़ गये। तो आओ, आज इस पर ही वार्तालाप कर लें।

नीरज—हाँ आपने भी बहुत सुन्दर प्रश्न पूछा। अवश्य ही आप भी हर बात को गहराई से आँकने का प्रयास करती हो।

पंकज—हाँ, निसंदेह...

नीरज—हम अब भी एक बात देखते हैं कि जो आत्माएँ अपनी गलतियों को या अपनी कमियों को मन से स्वीकार कर लेते हैं वे बहुत आगे बढ़ जाते हैं।

पंकज—हाँ, यह तो देख ही रहे हैं कि जो केवल दूसरों को ही दोष देते रहते हैं, वे पीछे रह गये हैं।

नीरज—क्योंकि उन्हें कभी भी अंतर्मुखी होकर अपने दोष निकालने का संकल्प नहीं उठता।

पंकज—क्योंकि जो मनुष्य अपनी गलती मन से स्वीकार करता है, उसका मन उस गंदगी को निकाल कर बाहर फेंकने के लिए उत्प्रेरित हो उठता है।

नीरज—और वास्तव में अपनी लगती को मन से स्वीकार करना एक स्वच्छ दिल, निर्मल मन और साहसिक बुद्धि का प्रतीक है।

पंकज—परन्तु जहाँ अहं भाव है, वहाँ मनुष्य किसी भी कीमत पर अपने दोष स्वीकार करने को तैयार नहीं रहता।

नीरज—हाँ यह तो स्पष्ट देखा जा सकता है कि जो लोग आगे बढ़े हैं, उन्होंने इस सूक्ष्म अहं को गहराई से पहचाना और उसके अंश-अंश को जानकर अपने चित्त में प्रवेश नहीं होने दिया।

पंकज—सच नीरज, ये अहम् बढ़ा ही महीन दुश्मन है। साधारण बुद्धि वाले लोग तो इसे समझ भी नहीं पाते। यह कब प्रवेश करता है—यह पता ही नहीं चलता। इसको परखने के लिए भी तो बड़ी महीन व दिव्य बुद्धि की आवश्यकता है।

नीरज—परन्तु साक्षी होकर देखो कितनों ने इस दिव्य बुद्धि का वरदान प्राप्त किया है ? कइयों की तो अभी भी वही बुद्धि है जिसके साथ उन्होंने इस पथ पर कदम रखा था।

पंकज—हाँ, ऐसे बहुत ही कम होंगे। सचमुच जिन्होंने बुद्धि को स्वच्छ व महीन किया है, उन्होंने ही इस अहम् शत्रु को नष्ट किया और वे ही आज बहुत आगे बढ़ गये हैं।

नीरज—और जो अहम् के नशे में चूर खुद को आगे समझ बैठे हैं, वे तो सचमुच ही पीछे हैं। परन्तु उनका अहम् उन्हें इस सत्य का आभास ही नहीं करने देता।

पंकज—हाँ, यह अहम् तो मुख्य बात है ही। अव्यक्त महावाक्यों में भी हमने सुना था कि ब्रह्मा बाबा के सर्वप्रथम आगे जाने का कारण उनका अहम् भाव का त्याग ही था।

इसके अतिरिक्त आगे बढ़ने वालों का और क्या रहस्य है ?

नीरज—एक मुख्य गुण और भी रहा कि वे घुट-घुट कर नहीं रहे न उन्होंने अपने मन का दमन किया और न दूसरों के मन का।

पंकज—मतलब वे स्वच्छ रहे, कोई भी बात हुई तो उन्होंने स्पष्ट कर दी।

नीरज—हाँ, यह सरल स्वभाव भी मनुष्य की उन्नति में बहुत सहायक है। और क्योंकि उन्होंने किसी का दमन नहीं किया, जिसने जिस तरह आगे बढ़ना चाहा, उसे उसी तरह बढ़ने दिया। फलस्वरूप वे अनेकों के स्नेह व दुवाओं के पात्र बन गये। और ये दुवाएँ उन्हें निविघ्न रहने का बल देकर आगे बढ़ाती रहीं। ऐसी ही आत्माएँ आज विघ्न-विनाशक रूप से विश्व के आगे प्रख्यात होते जा रहे हैं।

पंकज—हाँ, नीरज बहन, मनुष्य यों ही किसी न किसी स्वार्थ वश, शंका वश दूसरों का दमन कर देता है और इस कारण अनेकों की बद-दुवाओं का हकदार बन जाता है।

नीरज—वैसे तो किसी को आगे बढ़ने से भला रोक भी कौन सकता है। मुझे ये पंक्तियाँ अति सुन्दर लगती हैं—

माया नहीं रोक सकी जिसको
संसार भला क्या रोकेगा
जिनका नाविक भगवान हो खुद
तूफान भला क्या रोकेगा।

परन्तु फिर भी हमारा थोड़ा सा सहारा दूसरों को उठा सकता है हमें किसी का भी दमन भी तो नहीं करना चाहिए।

पंकज—हाँ बहन, वास्तव में किसी का भी दमन करना बहुत बुरी बात है। हमें किसी का भी दमन करने का अधिकार भी है कहाँ! सच्चाई तो यही है कि जो मनुष्य दूसरे का दमन करता है, उसका स्वतः ही दमन हो जाता है।

परन्तु फिर भी हमारा थोड़ा सा सहारा दूसरों को उठा सकता है हमें किसी का भी दमन भी तो नहीं करना चाहिए।

पंकज—हाँ बहन, वास्तव में किसी का भी दमन करना बहुत बुरी बात है। हमें किसी का भी दमन करने का अधिकार भी है कहाँ! सच्चाई तो यही है कि जो मनुष्य दूसरे का दमन करता है, उसका स्वतः ही दमन हो जाता है।

नीरज—तो पंकज बहन, आज तक जो पुरुषार्थी बहुत आगे बढ़े हैं उसका एक यह भी रहस्य है कि उन्होंने दूसरों को आगे बढ़ाया है, दूसरों को आगे बढ़ता देख उन्होंने सुख की श्वास ली है।

पंकज—हाँ, जिन्होंने दूसरों को पीछे करने का जरा भी संकल्प रखा वे तो सचमुच ही पीछे रह गये।

नीरज—हाँ जो आगे बढ़े, अवश्य ही उन्हें अनेकों को सुख देने

स्वयं को आगे बढ़ाने के लिये सर्वप्रथम चारों विषयों में परिपक्वता ज़रूरी है। राजयोग का निरंतर अभ्यास परमाश्यक है। इसके अतिरिक्त अपनी कमियों को मन से स्वीकार कर उन्हें शीघ्र-अति-शीघ्र दूर करें। इसमें अपना अहं भाव न आने दें। किसी का दमन न करें, अन्यो को आगे बढ़ने में स्वयं का सहयोग देंगे तो उनकी दुवाओं से स्वयं भी आगे बढ़ जायेंगे।

का सूक्ष्म बल प्राप्त है। उन्होंने कभी भी किसी को तंग करने का, कष्ट देने का या बदला लेने का नहीं सोचा होगा।

पंकज—और भला भगवान के बच्चों को यह शोभता भी कहाँ है।

नीरज—और हाँ मुझे याद आया कि जो लोग आगे बढ़े, उनमें ज़िम्मेदारी सम्भालने का भी मुख्य गुण था। अर्थात् जो भी ज़िम्मेदारी उन्हें दी गई, उन्होंने सब कुछ सहन करके भी उसे पूर्ण किया। ये गुण उन्हें आगे बढ़ा ले गया।

पंकज—हाँ, यह गुण भी महानता का द्योतक है। यद्यपि ज़िम्मेदारी निभाने में कष्ट होता है, त्याग भी करना पड़ता है, परन्तु जो व्यक्ति ज़िम्मेदारी को ज़िम्मेदारी समझ कर पूर्ण करता है, उसे ईश्वरीय बल प्राप्त होता है और वह आगे बढ़ जाता है।

नीरज—एक बात मुझे और याद आ गई।

पंकज—बोलो बहन...

नीरज—उन्होंने सदा ही सीखने का संकल्प रखा। ये कभी नहीं सोचा कि हम तो सब कुछ जानते हैं। और इस प्रकार जल्दी-जल्दी स्वयं में सुधार करते गये।

पंकज—हाँ बहन, यह गुण तो आगे बढ़ने का मुख्य साधन है।

नीरज—और हाँ, हमने यह भी तो सुना है कि उन्होंने जीवन में कभी भी 'ना' नहीं कहा। सदा 'हाँ जी' ही उनके मुख की शोभा रही।

पंकज—इसलिए ही तो अब उनके आगे भी सब हाँ जी करते हैं।

नीरज—और यह 'हाँ जी' उन्हें परमपिता व दैवी परिवार के समीप ले आया।

पंकज—हाँ सचमुच हर बात में 'ना' करना तो जैसे कि आसुरी लक्षण प्रतीत होता है।

नीरज—इससे बड़ा नुकसान होता है। फिर उन्हें कभी भी नई ज़िम्मेदारी नहीं दी जाती। फलस्वरूप उनकी उन्नति का मार्ग अवरूढ़ हो जाता है।

पंकज—इन धारणाओं के साथ और भी कुछ देखने में आता है ?

नीरज—हाँ जो पीछे रह गये, उसका एक मुख्य कारण यह भी रहा कि उनका ये अमूल्य जीवन रोटी, कपड़ा और मकान के चक्कर में ही पूर्ण हो गया। अपने रुहानी लक्ष्य को भूलकर, ईश्वरीय आनन्दों को एक तरफ रखकर, ये आत्माएँ संघर्षों में ही संगम के महान क्षणों को व्यतीत करती रहीं।

पंकज—और अब वे मानो खाली हाथ हैं। जरूर पीछे मुड़कर अपने सम्पूर्ण जीवन पर कभी नजर दौड़ाते होंगे तो खुशियाँ कम व निराशा ज्यादा प्रतीत होगी।

नीरज—पंकज बहन, ये तो रही छोटी-छोटी धारणाएँ। परन्तु केवल इन्हीं के बल पर कोई मनुष्य आगे नहीं बढ़ता।

पंकज—हाँ चारों ही विषयों में परिपक्वता व संतुलन जरूरी है।

नीरज—जो लोग आगे बढ़े उन्होंने योग-अभ्यास पर शुरू से ही बहुत ध्यान दिया। वे कर्मयोगी बने। दिन प्रतिदिन उन्होंने योग की गुह्यता को समझा।

पंकज—और जो मात्र नेमीनाथ ही रहे थे वे पीछे रह गये।

नीरज—इतना ही नहीं, उनमें ज्ञान का बल, वाचा बल स्पष्ट दिखाई देता है। क्योंकि यदि प्रतिदिन ज्ञान के गुह्यता के साथ स्वयं को भी गुह्यता में न ले जाया जाए तो जीवन में अनेक वर्षों तक उमंग उत्साह रखना खेल तो नहीं है।

पंकज—हाँ नीरज बहन, यदि नये अनुभव न हों, तो नया उमंग भी नहीं रह सकता। क्योंकि वही वही बातें नया अनुभव नहीं दे सकतीं।

नीरज—हाँ, यही मैं कह रही थी कि ईश्वरीय महावाक्यों के अनुरूप हमें अपनी विचारधारा को ढालते रहना चाहिए।

पंकज—तो नीरज बहन, हम भी आगे बढ़ने वालों से प्रेरणाएँ लेकर आगे बढ़ें ताकि हमारा जीवन भी दूसरों के लिए प्रेरणादायक हो।

नीरज—हाँ अब हमें उड़ना होगा, ताकि हम भी आगे पहुँच जाएँ।

पंकज—आज की रुह-रिहान अति ही प्रेरणादायक रही। देखो, समय बार-बार घण्टी बजा रहा है। तो आओ आज से हम सदा ही योग-युक्त रहने की योजना बनाएँ।

नीरज—ठीक है पंकज बहन, अब हम पूरा जोर लगाएँ ये अन्तिम बाजी जीत लें। ताकि अंत में हमें पश्चाताप की घड़ियाँ न देखनी पड़ें।

पंकज—तो आज से हमारी व आपकी योग की रेस रहेगी।

नीरज—मुझे स्वीकार है।

पंकज—अच्छा बहन, विदाई... फिर मिलेंगे।

नीरज—सफलता की बधाई...



‘मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील के अभियान’ के अंतर्गत चंडीगढ़ में ब्रह्माकुमारी बहिनें राजकीय आदर्श विद्यालय, सेक्टर-३४, चंडीगढ़ में बच्चों के समझ प्रवचन करती हुई।

कला-सहयोगी बनाने की... !

□ डॉक्टर बलदेवराज गुप्ता., किशनपुरा

अलसस्य कुतः विद्या, अविद्यस्य कुतः धनम्।
अधनस्य कुतः मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम्॥

जो व्यक्ति आलसी है उसके लिए विद्या कहां और जो विद्याहीन है उसके पास धन कहां तथा जिसके पास धन नहीं है उसे मित्र कहां मिल सकते हैं और जिसके मित्र न हों उसे सुख नहीं मिल सकता। मित्र अर्थात् सहयोगियों की हमारे जीवन में अत्यंत आवश्यकता है। सहयोगियों के बिना हमारे कार्य नहीं हो सकते। जब भी हम किसी कार्य को करना प्रारम्भ करते हैं तो उस समय हमें एक या अनेक सहयोगियों की आवश्यकता पड़ती है। यदि हमें सहयोगी न मिले तो हमारा कार्य अधूरा रह जाता है या समय पर पूरा नहीं होता या बिल्कुल ठप्प हो जाता है। अतः यदि हम चाहते हैं कि हमारे कार्य ठीक ढंग-से तथा ठीक समय पर हमारी इच्छानुसार हों तो हमें अपने सहयोगी अवश्य बनाने पड़ेंगे नहीं तो कई बार ऐसा भी होता है कि हमारे मन के अंदर कई प्रकार की इच्छाएं पैदा होती हैं लेकिन हम अकेले उन इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सकते तो हमारी वे तीव्र इच्छाएं दबकर रह जाती हैं। जिससे हमारा मन मायूस-सा दबा-दबा सा रहता है तथा हम सदा दिलशिकस्त से बने रहते हैं। इसका इलाज यही है कि हम ज्यादा-से-ज्यादा सहयोगी बनाने की कोशिश करें। सहयोगियों के बिना हम अपने को अकेला-सा महसूस करते हैं तथा हमें अपना संसार छोटा लगता है और हमारा अनुभव सीमित-सा रह जाता है। हमारे विचार संकुचित हो जाते हैं। अपने सहयोगियों को देखकर हमें खुशी होती है। जिस प्रकार एक राजा अपने सिपहसलारों को देखकर खुश होता है तथा उसका दिमाग सदा हल्का रहता है, उसी प्रकार अच्छे सहयोगियों के मिल जाने से हम भी निश्चित तथा प्रसन्नचित रह सकते हैं।

सहयोगी बनाना भी एक कला है या यूँ कहिए कि सहयोग लेना भी एक कला है। प्रत्येक कार्य को करने में मेहनत तो लगती ही है और हमें त्याग व तपस्या तो करनी ही पड़ती है। इसी प्रकार दूसरों को अपना सहयोगी बनाने के लिए भी मेहनत, त्याग व तपस्या की आवश्यकता है। जब हमारे सहयोगी बन जाते हैं तब हमें वह त्याग व तपस्या कोई

मुश्किल नहीं लगती। हम यदि यह समझें या सोचें कि जिसको ज़रूरत है वह हमारा सहयोगी बन जाए और अपनी तरफ से हम कोई पुरुषार्थ न करें तो ऐसा सोचना बिल्कुल गलत है, हमें पुरुषार्थ करना ही पड़ेगा तभी हम सहयोगी बना सकते हैं। हम किस प्रकार दूसरों को अपने नज़दीक लाकर सहयोगी बना सकते हैं इसके लिए कुछ बातें मैं लिख रहा हूँ आप भी आजमा कर देख सकते हैं।

1. सबको खुश रखो जो वह चाहता है उसे वही दो:—

प्रत्येक व्यक्ति खुश रहना चाहता है, दुखी कोई होना नहीं चाहता, इसलिए हमें सदा चाहिए कि हम दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करें जिससे उनको रिचकमात्र भी दुख न हो। ऐसी बात या ऐसा काम हम न करें जिससे किसी को दुख हो इसके लिए आवश्यक है कि जो व्यक्ति जो चाहता है या जो उसकी पसंद है हम उसे वही दें। एक बार एक व्यक्ति गाय के बछड़े को खींच रहा था, जितना वह खींचने को जोर लगाता उतना ही बछड़ा अकड़ता जाता। पास से गुजर रहे एक व्यक्ति ने उसे कहा कि इस बछड़े को तंग मत करो, थोड़ा हरा चारा हाथ में लेकर इसे खाने को दो, फिर चारा हाथ में लेकर आप चलते जाना तो फिर यह बछड़ा चारे के लालच में आपके साथ-साथ चलेगा। उस व्यक्ति के ऐसा करने पर बछड़ा स्वयं ही चलने लगा उसे खींचने की आवश्यकता नहीं रही। इसी प्रकार हमें भी यह परखना चाहिए कि अमुक व्यक्ति की पसंद क्या है, उसकी चाहना क्या है! उसकी चाहना के मुताबिक हम उससे व्यवहार करें और यदि हम उसकी चाहना की अवहेलना करके अपने संस्कार स्वभाव या विचार उस पर थोपना चाहेंगे तो हो सकता है वह व्यक्ति हमारे संस्कार स्वभाव आदि को स्वीकार न करे और हमारा विरोध करे और बजाय हमारा सहयोगी बनने के विरोधी बन जाय। प्रत्येक व्यक्ति के संस्कार स्वभाव में थोड़ा-बहुत अंतर अवश्य रहता है। शत-प्रतिशत संस्कार स्वभाव किसी के मिल नहीं सकते अतः हमें यह चाहिए कि हम सभी को खुश रखें तथा जो वह चाहता है उसे वही दें।

2. सबकी प्रशंसा करो:—

प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रशंसा का इच्छुक है। कोई भी व्यक्ति अपनी ग्लानि सुनकर राज़ी नहीं है। और प्रत्येक व्यक्ति के अंदर प्रशंसनीय गुण भी होते हैं तथा कुछ अवगुण भी होते हैं। उसके अवगुणों को उठाकर हम चाहे कितनी मर्जी उसकी ग्लानि करते रहें तथा उसे फटकारते रहें या नीचा दिखाते रहें तथा चाहें हम उसके गुणों को लेकर उसकी जितनी मर्जी प्रशंसा करते रहें तथा उसे जितना मर्जी ऊंचा चढ़ा सकते हैं। यदि हम किसी के अवगुणों या संस्कारों की भिन्नता को न देख उसके गुणों पर ही नज़र डालते हैं तथा गुणों के कारण ही उसकी प्रशंसा करते रहते हैं तो वह व्यक्ति भी हमारी प्रशंसा करेगा, हमारे नज़दीक आयेगा, उसके अंदर हमारे प्रति स्नेह उत्पन्न होगा, इसके विपरीत यदि हम उसके अवगुणों पर ही नज़र रखते हैं तथा अवगुणों का ही वर्णन करते रहते हैं तो उस व्यक्ति से हमें भी नफ़रत हो जाती है। तथा उसके मन में भी हमारे प्रति स्नेह नहीं उमड़ता, जिससे दिन-प्रतिदिन दूरी बढ़ती जाती है तथा वह हमारा सहयोगी नहीं बन सकता। अतः हमें चाहिए कि हम किसी के अवगुणों या भिन्न संस्कारों को न देख उसके गुणों को देख सदा उसकी प्रशंसा करते रहें। किसी की प्रशंसा करने में हमारा कोई खर्चा नहीं होता बल्कि हमें काफ़ी प्राप्ति हो सकती है। चाहे कोई कितना भी धैर्यवान या बुद्धिमान क्यों न हो फिर भी रोज़ की नोक-झोंक से तंग आ ही जाता है। यदि हमें किसी का अवगुण बहुत ही अखरता है और हम उसे महसूस कराना ही चाहते हैं तो भी पहले उसके आगे उसके गुणों की प्रशंसा करके बाद में ढंग-से उसके आगे उसका अवगुण रखना चाहिए जिससे उसे किसी प्रकार की महसूसता न आये। प्रशंसा एक ऐसा जादू है जिससे हम बड़े-से-बड़े सांप को भी वीना की तरह वश कर सकते हैं। अतः हमें सबकी प्रशंसा करते रहना चाहिए न कि ग्लानि।

3. अवगुण चित्त पर न धरो:—

प्रत्येक आत्मा के अंदर जहाँ अनेक गुण होते हैं वहाँ कुछ अवगुण अवश्य होते हैं और व्यवहार में आते-आते हमें उन अवगुणों की जानकारी भी हो जाती है। लेकिन हमें चाहिए कि हम उस व्यक्ति के अवगुणों को देखकर उस व्यक्ति को अपनी नज़रों से न गिराएँ तथा न ही उसके अवगुणों को दूसरों के आगे वर्णन करें या दूसरों तक फैलाएँ बल्कि उसे अपना समझकर उसके अवगुणों को समेटने व समाने की कोशिश करें। यदि उसे हमने अपनी नज़रों से गिरा दिया तो उसका कल्याण हम कैसे कर सकेंगे, यदि हमारे अंदर उस आत्मा के

प्रति नफ़रत की भावना बढ़ती जाएगी तो हमारे मन में उसके प्रति कल्याण भावना का अभाव होता जाएगा, हमारी दूरी बढ़ती जाएगी। यदि हम हरेक आत्मा के गुणों को ही उठाएंगे और उन्हें अपने चित्त पर धरेंगे और उन गुणों से हम जो सेवा ले सकते हैं उन्हें उसी सेवा में लगा देंगे तो कभी-न-कभी उस आत्मा के अवगुण भी निकल सकते हैं। तथा गुण वृद्धि को पा सकते हैं। ऐसा करने से हमें सहयोग भी मिलता रहेगा तथा उस आत्मा का कल्याण भी हो जायेगा। इसके विपरीत किसी के अवगुणों को चित्त पर रखने से न तो हम सहयोग ले सकेंगे न उस आत्मा का कल्याण कर सकेंगे। अतः हमें चाहिए कि हम जानते हुए भी आत्माओं के अवगुणों को न देखें, न वर्णन करें बल्कि उनके गुणों का लाभ लेते जाएँ।

4. क्षमावान बनो:—

प्रत्येक ज्ञानवान व्यक्ति यही चाहता है कि मैं किसी को दुख न दूँ। फिर भी कभी कोई व्यक्ति कोई ऐसी गलती कर बैठता है जिससे दूसरों को दुख पहुंचता है। बाद में वह अंदर-ही-अंदर अपनी गलती को महसूस भी करता है तथा चाहता है कि मुझे क्षमा कर दिया जाए। हमारा अथवा स्वयं का भी यही हाल होता है। जब हमसे कोई भूल हो जाती है तो हम भी यही चाहते हैं कि कोई हमें क्षमा कर दे। यदि हमें क्षमा मिल जाती है तो हम बहुत खुश हो जाते हैं तथा जिसने हमें क्षमा किया है उससे हमारा और भी स्नेह बढ़ जाता है। अतः हमें चाहिए कि हम अपने छोटों-बड़ों को उनकी भूलों, गलतियों, कमज़ोरियों, कमज़ोरियों व अवगुणों के लिए उन्हें क्षमा करते रहें ताकि हमारा और उनका दोनों का रास्ता आगे के लिए साफ हो जाए। चाहे किसी के किसी शब्द अथवा कर्म से हमें कितना भी गहरा घाव क्यों न हो जाए लेकिन क्षमा की मरहम लगाकर हम, अपने व दूसरों के घावों को चमत्कारी ढंग-से भर सकते हैं। बेशक क्षमा करना भी एक विशाल हृदय का काम है तथा सहनशीलता की चरम-सीमा है। परंतु क्षमा की शक्ति हमारे अंदर आते ही हम घावों को भरकर अतीत की पीड़ा-से निकलकर एक नये शुभारम्भ का उदय कर सकते हैं। इसके विपरीत यदि हमारा स्वभाव कठोर है तथा हम किसी के किए का बदला ही लेना चाहते हैं तो ऐसे हमारे कुठित स्वभाव से डरकर कोई हमारे नज़दीक नहीं आयेगा और किसी को अपना नहीं बना सकेंगे।

5. स्नेहमूर्त बन स्नेह बरसाना सीखो:—

प्रत्येक व्यक्ति बचपन से ही स्नेह का चात्रक है। स्नेह देकर हम किसी को भी अपना बना सकते हैं। लेकिन हम स्नेह तभी

दे सकते हैं जबकि हम स्नेहमूर्त बनें या स्नेह-स्वरूप बनें । और स्नेह बरसाते समय हमारी बुद्धि में किसी प्रकार का भेदभाव न आए । जैसे बादल जब पानी से भर जाते हैं तो वे बरसे बिना नहीं रह सकते, इसी प्रकार जो स्नेहमूर्त है वह स्नेह की वर्षा किये बिना नहीं रह सकता, और बादल जब बरसते हैं तो यह नहीं देखते कि नीचे सूखी ज़मीन है या हरी ज़मीन है या सागर है । वो यह नहीं सोचते कि कहां बरसना है, कहां नहीं बरसना है । उन्हें तो बरसना ही है । इसी प्रकार स्नेहमूर्त व्यक्ति यह नहीं सोचता कि मुझे किसको स्नेह देना है, किसको नहीं देना है । कई व्यक्तियों के अवगुण या दुष्कर्म, या हमारे प्रति किया गया उनका अभद्र व्यवहार जब बुद्धि में आ जाता है तो न चाहते हुए भी उनके प्रति नफरत की भावना पैदा हो जाने से हमारा स्नेह उनके प्रति सिकुड़-सा जाता है और हमारा स्वभाव कुंठित-सा हो जाता है । लेकिन हमें चाहिए कि ऐसी स्थिति आ जाने पर हम अपने विचारों को बेहद में रखें तथा क्षमा व सहनशीलता को बुद्धि में लाकर अपने मनोभावों को बदल दें और स्नेहमूर्त बन बादलों की तरह स्नेह बरसाते रहें । अनुभव यह कहता है कि स्नेह से हम कड़े-से-कड़े स्वभाव वाले को भी नर्म स्वभाव वाला बना सकते हैं । तथा स्नेह देते रहने से हमें आत्माओं और परमात्मा से भी उसके बदले में स्नेह अवश्य मिलेगा । इस प्रकार हम स्नेही बनकर औरों को भी स्नेही बना सकते हैं । यही स्नेही आत्माएं हमें सहयोग देने से इंकार नहीं करेंगी ।

6. किसी के आत्म-सम्मान को चोट नहीं पहुंचाओ:—

प्रत्येक व्यक्ति अपने-आपको कुछ न कुछ समझता है यही उसका आत्म-सम्मान है और हम भी अपने-आपको कुछ न कुछ समझते हैं यही हमारा आत्म-सम्मान है । कोई भी व्यक्ति किसी से तिरस्कृत होना पसंद नहीं करता तथा न ही हम चाहते हैं कि हमारा कोई तिरस्कार करे । यदि हम स्वयं के आत्म-सम्मान को तो समझते हैं और इसकी रक्षा करते हैं परंतु दूसरे व्यक्ति को हर जगह नीचा दिखाकर या उसे हतोत्साह करके या उसे तिरस्कृत करके उसके आत्म-सम्मान को चोट पहुंचाना चाहते हैं, तो सर्वथा अनुचित बात है । हमें चाहिए कि हम दूसरों के आत्म-सम्मान को भी समझें तथा जितनी हम अपने आत्म-सम्मान को महत्ता देते हैं उतनी महत्ता हम दूसरों के आत्म-सम्मान को भी दें चाहे दूसरा व्यक्ति कितना भी छोटे-से छोटा है या बड़े-से बड़ा । कई बार ऐसा होता है कि कोई छोटा व्यक्ति हमें कोई राय देता है जोकि बिल्कुल हमारे अनुकूल होती

दूसरों को अपना सहयोगी बनाने के लिए उनके गुणों को देखते हुए उनके अवगुणों को न देखें, बल्कि उनके गुणों की सराहना करें, प्रशंसा करें । दूसरों के भूलों को मुलाकर क्षमा कर दें । स्वयं के प्रति अपमान को सहन कर लें, स्नेहमूर्त बनकर स्नेह की वर्षा करते चलें, सर्व के प्रति मैत्रीभाव रखें । इन बातों से आपको सहयोगियों की कमी नहीं रहेगी ।

है या कोई छोटा व्यक्ति हमें हमारी कमी या कमजोरी का अहसास कराता है तो उसे छोटे मुंह से निकली हुई बात समझकर हम स्वीकार करने से हिचकिचाते हैं ऐसा केवल हम अपने आत्म-अभिमान के कारण करते हैं आत्म-सम्मान के कारण नहीं । आत्म-सम्मान और आत्म-अभिमान दोनों एक-दूसरे के विरोधी हैं । ऐसा करके हमने अपने आत्म-अभिमान के कारण दूसरे के आत्म-सम्मान पर चोट पहुंचाई है । ऐसी परिस्थिति में हमें ऐसी बात को स्वीकार करके स्वयं भी अपने आत्म-सम्मान की रक्षा करनी चाहिए तथा दूसरे के सुझाव की प्रशंसा करके उसके आत्म-सम्मान को भी बढ़ावा देना चाहिए । अतः हम अपने-आपको प्रगतिशील, बड़े प्रतिभावान व बुद्धिवान मानें यहां तक कोई बात नहीं लेकिन दूसरों को बुद्धू, गंवार, फूहड़ या देहाती, मूर्ख समझना उचित नहीं है । इस प्रकार हम प्रत्येक व्यक्ति का मान करके मान पा सकते हैं ।

7. अपना अपमान सहन करना सीखो:—

अनुभव यह कहता है कि कई बार हम से छोटों या हम से बड़ों के मन में हमारे प्रति कई गलत धारणाएं बैठ जाती हैं तथा उन धारणाओं के कारण हमारे व्यवहार में कटुता व रूक्षता आ जाती है तथा कभी-कभी आपस में बोलबाला भी हो जाता है । जिससे हम समझते हैं कि हमारा अपमान हुआ है और यदि कोई हम से छोटा है तो हम समझते हैं कि यह हमारे सामने बोलता है, ऐसी हालत में जबकि हमारे सम्बंधों में दरार पड़ने की नौबत आ जाती है । हमें चाहिए कि हम मुकाबला न करें तथा स्वयं को सिद्ध करने की कोशिश न करें बल्कि यहां अपने सम्बंधों को विराम दे दें । क्योंकि हो सकता है वह व्यक्ति किसी के बहकावे

सदा हर कर्म में 'हां जी' करें । हर दी गई जिम्मेदारी को सार्थक स्वीकार करें । केवल नेमीनाथ ही न बने रहें परंतु ज्ञानयोग के नित नए-नए अनुभव कर सदा उमंग-उत्साह में रह उन्नति के शिखर की ओर बढ़ते रहें ।

में आया हो, या स्वयं किसी विक-परिस्थिति में हो या भावुकतावश हो या उसकी बुद्धि अभी विकसित न हुई हो, और जब समय आने पर उसे अपनी गलती का अहसास होगा तो वह स्वयं ही पश्चाताप कर लेगा और फिर हम नए सम्बंधों की शुरुआत कर सकते हैं। लेकिन यदि हम अपना अपमान समझकर या यह सोचकर कि यह हमारे सामने बोलता है अपने अंदर बदले की भावना ले आए तथा ईट का जवाब पत्थर से देना शुरू कर दे तो एक तो हम वातावरण को खराब करने के निमित्त बनेंगे दूसरा सम्बंधों के बिगड़ जाने पर उनका सुधार असम्भव हो जाएगा। शुरू में तो हमें ऐसा लगेगा कि हमारा अपमान हुआ है लेकिन उस अपमान को सहनकर लेने पर बाद में हम और ही ज्यादा मान प्राप्ति के हकदार बन सकते हैं तथा हमारी छवि और भी सुधर सकती है।

8. मैत्री का भाव रखें:—

जब हम किसी को छोटा या बड़ा समझते हैं तो हम उनसे कई प्रकार की आशाएं रखते हैं। यदि कोई स्वयं को बड़ा समझता है तो वो छोटों-से मान प्राप्ति की आशा रखेगा या उन्हें छोटा समझकर उन्हें अपने अधीन रखने की कोशिश करेगा या उनके ऊपर रोब जमाएगा, या कोई छोटा होगा तो वह बड़ों-से स्नेह की आशा रखेगा कि बड़े हमें स्नेह दें, हमारी पालना करें,

हमारी समस्याओं को हल करें, हमें फलांवस्तु दें, इत्यादि। यदि दोनों अवस्थाओं में हमारी मांग पूरी न हो तो हमें खिन्नता होती है। देखा गया है कि कई छोटे-बड़ों के अनुसार नहीं चल सकते हैं तथा कई बड़े छोटों की आशाओं को पूर्ण नहीं कर सकते। ऐसी अवस्था में असंतुष्टता बनी रहती है। यदि हम छोटे-बड़े का सवाल खत्म करके सभी से मैत्रीभाव रखें तो हमारी आशाएं उत्पन्न ही नहीं होंगी क्योंकि मित्र एक बराबर का दर्जा है तथा अपनी सामर्थ्य के अनुसार हमें सहयोग देता ही है। तथा हम भी उसे अपनी सामर्थ्य के अनुसार सहयोग देने की सोचेंगे। मित्र हमेशा मित्र के लिए त्याग भावना को लिए होता है तथा हर मुश्किल में मित्र का सहयोग मिलता है। फिर भी मित्र अपने मित्र से कुछ मांगता नहीं है जिससे संबंधों में सदा मधुरता बनी रहती है। अतः हमें सदा चाहिए कि हम अपने अन्दर छोटे-बड़े के मर्तबे के अनुसार चलते हुए भी अपने मन में सभी आत्माओं के प्रति मैत्री भाव अवश्य रखें तथा मित्रता का व्यवहार करें तो हमें सदा सभी का सहयोग मिलता रहेगा।

अतः हमें चाहिए कि हम अपने व्यवहार को ऐसा बनाएं कि कोई भी व्यक्ति हमारे अवगुणों के कारण हमसे दूर न चला जाए या हमें दोष देकर हमसे दूर न चला जाए। जब हमारा ऐसा व्यवहार होगा तो हमारे पास सहयोगियों की कमी नहीं रहेगी और हम सदा सुखी रह सकते हैं। □



बम्बई (मुंबई): में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन मुंबई तथा ब्र. कु. ई. वि. विद्यालय के सहयोग से आयोजित 'मेडिटेशन तथा मेडिसन' विषय पर गोष्ठी में भाग लेने वाली महिलाएं, श्रीमती डॉ. भारती चं. के. गोखरी तथा श्रीमती डॉ. लालका।

बात-बात में बात !

□ले.-ब्रह्माकुमारी चक्रधारी., दिल्ली

टयारे बच्चो, आपने एक कहावत सुनी होगी, 'जस केले के पात-पात में पात, तस ज्ञानी की बात-बात में बात।' कई बार कोई बात सुनने में तो बहुत सहज और साधारण लगती है लेकिन अगर उस बात की गहराई में जाकर देखें तो सचमुच वह बहुत ही गुह्य रहस्य लिये हुए होती है और ज्ञानी व्यक्ति तो सदा ऐसी ही बात करते हैं। उनके शब्द साधारण नहीं परंतु एक गुह्य राज को स्पष्ट करनेवाले होते हैं। इस प्रकार के कई उदाहरण हमारे सामने आते हैं। आज एक उदाहरण एक कहानी के रूप में आपको सुनाती हूँ:—

एक सेठजी थे जिनका नाम था धनपतराय। वे बहुत धनी-मानी व्यक्ति थे। बहुत धनवान होने के कारण वे बहुत शान-शौकत में रहते थे। सारे शहर के लोग भी उसको उसी निगाह से देखते व इज्जत करते थे। सेठजी का बेटा अब विवाह-योग्य हो चुका था। सेठ धनपतराय ने अपने पुत्र के लिए कोई योग्य-वधु की खोज प्रारम्भ कर दी और आखिर वह दिन आ गया जब उन्हें अच्छे कुल की एक कन्या की जानकारी मिली और उन्होंने अपने इकलौते पुत्र का विवाह बहुत ही धूमधाम से सम्पन्न किया और बाजे बजवाते अपनी पुत्र-वधु को खुशी-खुशी अपने लें आए। सेठजी अपनी पुत्र-वधु को देख खुशी-से फूले नहीं समाते थे। बहु भी बहुत ही समझदार, आज्ञाकारी तथा हर कार्य में कुशल थी इसलिए सेठजी भी उससे बहुत प्रसन्न थे।

अभी विवाह को कुछ ही दिन बीते थे, एक दिन एक मिखारी भीख मांगता, आवाज़ लगाता हुआ सेठजी के मकान के आगे आ खड़ा हुआ। वह कह रहा था—'तीन जन्म का-भूखा हूँ, कोई रोटी-टुकड़ा दे।' बहु ने ऊपर से ही आवाज़ लगाते हुए कहा—'बासी टुकड़े खाते हैं, कल उपवास करेंगे।' सेठजी के कानों में जब ये शब्द गये तो उन्हें बहुत गुस्सा आ गया। वे सोचने लगे कि कमाल है, इस बहु को मैं हर चीज बढ़िया-से-बढ़िया लाकर देता हूँ—पूड़ी, कचौड़ी, हलवा, खीर, मालपुड़े, अनेक प्रकार के व्यंजनों से इसको भरपूर रखता हूँ—यह फिर भी कहती है कि 'बासी टुकड़े खाते हैं, कल उपवास करेंगे।' आखिर मैंने क्या कमी रखी है इसको! यह बहु तो मेरी इज्जत ही मिट्टी में मिला देगी। सोचते-सोचते उनके क्रोध का ज्वर बढ़ता गया और उन्होंने तय कर लिया कि

अब तो इसे वापस इसके मायके में भेजना ही पड़ेगा।

सेठजी बड़े तेज कदमों-से अपने घर के आंगन से बाहर निकले और उन्होंने पंचायत बिठाई। वधु के पिता को भी बुलवाया गया और सेठजी ने सारी कहानी उन्हें सुनाते हुए कहा कि 'ले जाइए अपनी बेटी को अपने साथ! इसने तो हमें कहीं का नहीं छोड़ा।'

पंचायत के मुखिया ने सेठजी की इस बात को सुनते हुए कहा—सेठजी, उतावलेपन में फैसला कर लेना उचित नहीं। आप तो स्वयं ही कहते थे कि आपकी बहु बहुत समझदार है, आप उसे बुलवाकर पूछिए तो सही कि उसने ऐसा क्यों कहा? अवश्य ही उसका कोई अर्थ होगा।

सेठजी को भी उनकी बात जंच गई। उन्होंने अपनी बहु को बुलवाया भेजा। बहु बड़े आदर-भाव से आकर वहां बैठ गई। उससे सेठजी ने पूछा कि बहु, तुम यह तो बताओ कि मिखारी के यह कहने पर 'तीन जन्म का भूखा हूँ, कोई रोटी-टुकड़ा दे' तुमने यह क्यों कहा कि 'बासी टुकड़े खाते हैं, कल उपवास करेंगे?' क्या तुम बासी टुकड़ों पर गुजारा कर रही हो? इतनी समझदार होते हुए भी तुमने ऐसा क्यों कहा? बहु ने कहा—ससुरजी, मैं कुछ गलत कहूँ तो क्षमाकर दीजिएगा। बात यह है कि मिखारी का यह कहना कि 'तीन जन्म का भूखा हूँ...' इसका अर्थ यह कि पिछले जन्म में वह गरीब था तो वह कुछ दान नहीं कर सका और इसलिए इस जन्म में मिखारी है। इस जन्म में क्योंकि वह गरीब है तो अभी भी वह दान नहीं कर सकता और इसलिए अगले जन्म में भी यह गरीब और भूखा ही रहेगा और इसलिए वह कहता है कि तीन जन्म का भूखा हूँ...। और इस पर मैंने जो उसे जवाब दिया, उसका भाव यह है कि हमने पिछले जन्म में जो दानपुण्य किया था, उसकी प्रारब्ध रूप में हमें यह सब धन-धान्य मिला। यह हमारे पिछले जन्मों में किए गए कर्म का फल है, तभी मैंने कहा कि बासी टुकड़े खाते हैं, परंतु ससुरजी, इस जन्म में हमारे इस घर में तो दान करने की प्रथा ही नहीं है तो अगले जन्म में जरूर भूखा ही रहना पड़ेगा अर्थात् उपवास ही रखना पड़ेगा। मेरा यह कहने का भावार्थ यही था।

सेठजी बहु की यह बात सुनकर कुछ लज्जित भी हुए और

अथ पृष्ठ १९ पर

भारतीय युवकों में संस्कारों की क्रांति राष्ट्रहित में आवश्यक !

□ ले. - ब्र. कु. व्ही. जे. वराडपांडे, दमोह

युवा वर्ग विश्व का आधार स्तम्भ है। भौतिक या आध्यात्मिक जगत में युवा विश्व की आशा है। युवक ही बच्चे और बूढ़े का सहारा है। युवावस्था एक वरदान है। यह तो हुई युवा की संक्षिप्त महिमा जो दुनिया वाले गाते रहते। किंतु साथ-ही-साथ यह भी प्रश्न आता है कि वर्तमान में यह युवक की महिमा कहाँ गुम हो गई, क्यों गुम हो गई? आज युवक अनेक बंधनों में जकड़ा हुआ अनुभव करता है अर्थात् मित्रता का बंधन, पत्नी और उसकी आवश्यकताओं का बंधन, मात-पिता के ऋण से मुक्त होने का बंधन, अपनी मांगों को पूरा करने के लिए नेताओं के आह्वानों का बंधन आदि। ऐसी हालत में युवक क्या करे, किस ओर जाये ऐसी किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति उसकी बन चुकी है। विवशता के कारण वह बेचैन है। इस प्रकार युवा की वर्तमान मनोस्थिति और उसकी दिशाहीनता से सब अच्छी तरह परिचित हैं। उसकी गलतियाँ निकालते हैं, उस पर टीका-टिप्पणी भी करते हैं। युवक की बिगड़ी हुई छवि के अनेक कारण भी बताते हैं। रोगी के रोग का वर्णन करने से और उस रोग के कारण बताने मात्र से काम चलने का नहीं। आज आवश्यकता है निवारण करने की, उसे अचूक दवा देकर उसका प्रभावी ढंग से इलाज करने की। क्या ऐसी अचूक दवा, प्रभावी इलाज खोजा गया? नहीं, रोग निवारण होने की बजाए बढ़ता ही जा रहा है।

किसी भी रोग का इलाज करने के पूर्व उसका अचूक निदान (डॉयग्नोसिस) आवश्यक है अन्यथा गलत इलाज से फायदा नहीं। रोग के मूल में, गहराई में जाना आवश्यक है। चरित्र-हीनता का मूल क्या है? युवकों के विचारों में, कर्मों में चरित्र में दिव्यता क्यों नहीं आती? इन प्रश्नों पर गहराई और गम्भीरता से विचार करना आवश्यक है। तो इस पर हम विचार करेंगे।

पहिले तो हमें यह सोचना होगा कि मनुष्य चाहे युवा हो या बाल हो या वृद्ध हो, कोई कर्म करता है, अच्छा या बुरा, तो उसका आधार क्या है? फिर देखना होगा कि उस आधार का भी आधार क्या है? वास्तव में कर्मों का आधार होता है दिचार अर्थात् संकल्प। मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही कर्म करता है।

इस बात को सभी मानेंगे। किंतु हमें आगे यह भी देखना है कि आखिर विचारों का आधार क्या है? विचारों का भी तो कोई आधार होना चाहिए न? शायद बहुत कम लोग जानते हैं और सम्भवतः आज का युवा वर्ग तो यह जानता ही नहीं कि विचारों का आधार होता है 'संस्कार'। तो विचार-कर्म-संस्कार यह एक चक्र है, श्रृंखला है जो एक-दूसरे से जुड़ी हुई है। निष्कर्ष यह निकला कि मूलाधार है संस्कार अर्थात् जैसे संस्कार होंगे वैसा विचार चलता है और जैसा विचार चलता है वैसा कर्म होता है। तो विचारों का आधार है संस्कार।

जब तक संस्कारों में क्रांति नहीं होगी तब तक युवकों के विचारों और कर्मों में क्रांति नहीं हो सकती। आम लोगों की यह मान्यता है कि संस्कार परिवर्तन असम्भव है। किंतु यह मान्यता गलत है। संस्कार परिवर्तन का उपाय मानव आज तक ढूँढ़ नहीं सका यही कारण है कि चरित्रहीनता बढ़ती गई।

अब यह जानना जरूरी है कि संस्कार है क्या चीज? इस विषय में विभिन्न मत-मान्यताएँ हैं। वास्तव में तर्क सम्मत मत यही है कि संस्कार वे प्रभाव अथवा अनुभव हैं जो कर्मों को करने से मनुष्य प्राप्त करता है। किये हुए कर्मों से जो अनुभव प्राप्त होते हैं, उनका प्रभाव मनुष्य के मन व बुद्धि पर पड़ता है। ये प्रभाव केवल एक जन्म के कर्मों के नहीं होते बल्कि अनेक जन्मों के कर्मों के होते हैं। मृत्यु के पश्चात् भी अविनाशी आत्मा में ये संस्कार संग्रहित होते हैं। इन्हीं संस्कारों के आधार पर मनुष्य का दृष्टिकोण, विचारशैली, रुचि, रुझान, मनोवृत्ति बनती है। वास्तव में सारा व्यक्तित्व संस्कारों पर आधारित है। व्यक्तित्व सुधारने के लिए संस्कारों को सुधारना पड़ेगा। जन्म-जन्म के संस्कार पक्के हो जाने के कारण उनमें परिवर्तन करना मुश्किल जरूर होता है। किंतु ऐसी बात नहीं कि परिवर्तन असम्भव है। जैसा कि पहिले कहा है कि संस्कार याने कर्मों से प्राप्त अनुभव या प्रभाव। किसी कर्म विशेष से सुखद अनुभव हो तो वही कर्म मनुष्य बार-बार करता है और बार-बार अनुभव प्राप्त होने से उसका प्रभाव चिरस्थायी हो जाता है। फिर उस प्रभाव को हटाना मुश्किल हो जाता है। वह चिरस्थायी प्रभाव तभी

हटाया जा सकता है जब मनुष्य-आत्मा को कोई ऐसा अनुभव प्राप्त हो जो अभी तक के प्राप्त अनुभवों से ही बढ़कर हो। उदाहरण के लिये जैसे कुछ वर्षों पूर्व तक मनुष्य रेडियो के अनुभव से प्रभावित था किंतु जब टेलीविजन का अनुभव ज्यादा अच्छा लगा तो रेडियो छोड़कर वह टेलीविजन की तरफ झुका। यह तो हुई भौतिकता की बात। वास्तव में मनुष्यों के जो भी संस्कार देखने में आते हैं वे बहिर्मुखी अर्थात् भौतिकता से रंगे होते हैं। बाह्य जगत अर्थात् दृश्य जगत की स्थूलता से अब तक मनुष्यात्माएं प्रभावित रही हैं इसलिए संस्कार बाह्यमुखी बने हैं। यदि बाह्यमुखता से अच्छा अनुभव उसे दिलाया जावे तो बाह्यमुखी अनुभव अर्थात् भौतिकता का अनुभव फीका पड़ जाएगा। अंतर्मुखता का अनुभव बाह्यमुखता के अनुभव से निश्चित ही श्रेष्ठ होता है। बाह्यमुखता में जो सुख या आनंद का अनुभव होता है वह अल्पकाल के लिये होता है। उस सुख में दुख समाया होता है। कभी सुख, कभी दुख, कभी हर्ष कभी विषाद यह बाह्यमुखता की निशानी है। किंतु अंतर्मुखता सदा सुख का अनुभव कराती है। यदि अंतर्मुखता का अनुभव हो जावे तो मनुष्य बाह्यमुखता से मुक्त हो जाएगा और अंतर्मुखता का अभ्यास करते-करते बाह्यमुखता के संस्कारों में परिवर्तन आता जायेगा। इस परिवर्तन के फलस्वरूप दृष्टिकोण, विचार, रुचि, रुझान, मनोवृत्ति में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होगा।

अंतर्मुखता ही आध्यात्मिकता है। आध्यात्मिकता अर्थात् स्वयं को पहिचानना। मेरा यथार्थ स्वरूप क्या है, मेरा यथार्थ निवास कहां का है, मेरा यथार्थ धर्म क्या है, काल-चक्र अथवा सृष्टि चक्र का यथार्थ ज्ञान, कर्मों की गहन गति का ज्ञान, परमात्मा-सत्ता का परिचय, ये सब बातें आध्यात्मिकता से संबंधित हैं। इन बातों का ज्ञान प्राप्त कर उस ज्ञान का अनुभव करना यही अंतर्मुखता है। जिसमें अलौकिक आनंदानुभूति समाई हुई है जो मनुष्य को लौकिकता और भौतिकता से दूर ले जाती है। फिर लौकिक बातों से उसका आकर्षण नहीं रह जाता।

अंतर्मुखता के संस्कार जैसे-जैसे भरते जाते हैं वैसे-वैसे मन, वचन, कर्मों में दिव्यता और श्रेष्ठता आती जाती है। अतः यदि युवकों को स्वयं का यथार्थ ज्ञान हो जावे और अंतर्मुखता का अभ्यास करने लग जावें तो निश्चित ही उनके कर्मों में श्रेष्ठता आ जायेगी। वह एक बदला हुआ श्रेष्ठ इन्सान नजर आयेगा। जब उसे मालूम हो जायेगा कि सभी मनुष्य ज्योतिर्बिंदु स्वरूप

हैं और भिन्न-भिन्न प्रकार के शरीर मनुष्य रूपी नकाब पहिन कर दुनिया में खेल खेल रहे हैं और सभी ज्योति-बिंदुओं का निवास स्थान ज्योति का देश (ब्रह्मलोक) है, और सबका पिता भी ज्योतिर्बिंदु स्वरूप है और सभी ज्योतिर्बिंदु रूप में आत्माएं होकर आपस में भाई-भाई हैं और इसलिये सबका धर्म भी एक है जो शांति और पवित्रता है, तभी युवकों की दृष्टि और वृत्ति में हितकारी, कल्याणकारी परिवर्तन आ सकेगा अन्यथा नहीं। यह एक मान्य सिद्धांत है कि जैसी स्मृति होती है वैसी कृति होती है। यदि किसी विद्यार्थी को समाचार दिया जाये कि वह फर्स्ट-डिवीजन में पास हुआ है तो वह तुरंत मिठाइयां बांटने लगेगा किंतु तुरंत बाद यदि उसे समाचार मिले कि वास्तव में वह फेल हो गया है तो वह आत्महत्या कर लेगा। युवा अभी इसी स्मृति में रमन कर रहा है कि वह देह है, उसका पिता भी देह धारी है और उसका घर इस दुनिया के किसी भाग में है और उसका धर्म भी देह से संबंधित है—जैसे मुसलमान धर्म, हिंदू धर्म, ईसाई धर्म आदि। उसे यह मालूम नहीं कि धर्म भेद, जाति भेद, प्रांत भेद, भाषा भेद, ये सब भेद देह पर आधारित हैं। इस अज्ञान के कारण वह अशांत, अधीर, दुखी, परेशान हो जाता है, विवेक भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट हो जाता है और हिंसा, तोड़फोड़ की ओर प्रवृत्त हो जाता है।

हमारी शुभेच्छा यही है कि पुराना युवक बदलकर नया युवक बन जावे। दुर्गुणों की बदबू सदगुणों की खुशबू में बदल जाये जिसकी खुशबू पाकर समाज, राष्ट्र व विश्व खुशनुमा बन जाये। पुराने संस्कार नये बनाना ही पुराना से नया बनना है। युवक का स्वभाव, दृष्टिकोण, विचारधारा ऐसी बदले जिससे समाज, राष्ट्र और विश्व को लाभ पहुंचे।

युवक को ना केवल शारीरिक शक्ति बल्कि उससे कहीं ज्यादा आत्मिक शक्ति व आत्म-बल की निहायत आवश्यकता है। शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिये तो उसके पास कई साधन उपलब्ध हैं और वह महसूस भी करता है कि शारीरिक बल होना चाहिए किंतु आत्म-बल क्या चीज है शायद वह जानता ही नहीं। उसे यह नहीं मालूम कि आत्म-बल शरीर-बल से श्रेष्ठ है। जो काम शरीर-बल नहीं कर पाता वह आत्म-बल कर सकता है। स्वयं की तथा ईश्वर की यथार्थ पहिचान से ही आत्म-बल आ सकता है। इस यथार्थ पहिचान के लिए नियम, संयम, धारणा आवश्यक है जिसके अभाव में आत्मानुभूति व ईश्वरानुभूति नहीं हो सकती। ये अनुभूतियां मन व बुद्धि करते हैं। मन व बुद्धि आत्मा के ही अंग हैं। मन व बुद्धि को शक्तिशाली बनाना ही आत्मा को बलवान बनाना है। शरीर को

स्वस्थ रखना जितना आवश्यक है उतना ही मन व बुद्धि को स्वस्थ रखना आवश्यक है। परंतु मन व बुद्धि को स्वस्थ अर्थात् पवित्र रखने के लिये हमेशा दुर्लभ होता आया है। आज का युवक तो इस तरफ ध्यान ही नहीं देता। शायद उसको यह मालूम ही नहीं कि मन व बुद्धि को स्वस्थ कैसे रखा जा सकता है। मन व बुद्धि की निर्मलता के लिये आहार, विहार, संग आदि की शुद्धता ज़रूरी है क्योंकि दूषित आहार, विहार, संग, का मन व बुद्धि पर बुरा असर पड़ता है जिससे मन व बुद्धि में मलीनता आ जाती है। मन व बुद्धि को पवित्र बनाने के लिए सात्विक आहार, सत्संग की आवश्यकता है। दूसरे शब्दों में ना बुरा देखना, ना बुरा सोचना, ना बुरा सुनना।

आज हम देखते हैं कि युवक अन्नदोष, संगदोष से बचा नहीं है, इन दोषों के कारण उसकी मन बुद्धि में भी दोष उत्पन्न हुआ है। मन बुद्धि को दूषित परिणामों से व दूषित वातावरण से बचाने का प्रयास विरला ही युवक करता है। गलत खान-पान, तामसी आहार, नशीली वस्तुओं का सेवन (जो आजकल विद्यार्थियों में देखने में आता है) मन बुद्धि को तामसी अर्थात् विलासी बनाता है, वृत्ति, दृष्टि को चंचल बनाता है, असंतोष अधैर्य, अशांति, विवेक-शून्यता आदि मनोविकारों को जन्म

देता है। कुसंग का असर भी मन व बुद्धि पर बुरा पड़ता है। जैसा संग होता वैसा रंग लगता। अश्लील और कामोत्तेजक साहित्य पढ़ना, अश्लील दृश्य, सिनेमा देखना इस प्रकार के सस्ते मनोरंजनों से मन व बुद्धि दूषित होती है। सिनेमा व अश्लील साहित्य वास्तव में बहलाव के नहीं किंतु बहकाव के साधन होते हैं जिससे युवक कर्मभ्रष्ट होता है। गलत रास्ते पर चलने लगता है। और अंततोगत्वा दुख और संकट को निमंत्रण देता है। अतः कामोत्तेजक दृश्य, कामोत्तेजक संगीत और कामोत्तेजक आहार और कामोत्तेजक संग से बचना अति आवश्यक है अन्यथा मन व बुद्धि कदापि निर्मल नहीं हो सकती और परिणामस्वरूप युवक के विचार एवं कर्म श्रेष्ठ नहीं हो सकते। उसे जानना होगा कि नियम व संयम ही जीवन का श्रृंगार है तथा पवित्र मन व बुद्धि ही श्रेष्ठ विचारों और कर्मों का आधार है। श्रेष्ठ विचार और श्रेष्ठ कर्म ही सच्चरित्रता के लक्षण हैं। और सच्चरित्रता ही राष्ट्र व समाज की पूंजी है। युवक को सजग और सतर्क करना होगा कि सर्व मंहगाई का कारण है— चरित्र की मंहगाई। चरित्र की मंहगाई युवक को पहले दूर करनी है। तत्पश्चात् ही सर्व मंहगाई दूर हो सकती है और सुखी समाज की स्थापना हो सकती है। □

गीत

स्वर्णिम विचार से स्वर्णिम संसार

□ ले.- श्री. के. मोहन 'आबू'

स्वर्णिम विचार से स्वर्णिम संसार।
शुभ हो संकल्प आये सतयुगी बहार।।

शुभ संकल्प देवी रचना रचाये।
सतयुगी दुनिया को धरती पे लाये।।
भरे गुणों के भंडार रे।।।

शुद्ध विचार ब्रह्मांड तक जाये।
सारे जगत को पावन बनाये।।
सृष्टि का हो जाये श्रृंगार रे।।।

सोचना ऊंचा तो कर्म हो न्यारे।
नव युग का आधार कर्म तुम्हारे।।
संकल्प बदले संस्कार रे।।।

ज्ञानी के विचार गुणों के गहने।
वो बने देव जिसने यह पहने।।
परमपिता का उपहार रे।।। □□□



एलाहाबाद में विश्व मानि अविद्या के शुभारम्भ कार्यक्रम पर भ्राता दशरथ नारायण शुक्ल (अतिरिक्त आयुक्त) को ईश्वरीय सीमांत भेंट करती हुई बहिन कुष्मा जी।

बात-बात में बात! पृष्ठ १६ का शेष

मन-ही-मन उन्होंने दृढ़ संकल्प भी किया कि आज से लेकर वे सुपात्र को अवश्य ही दान करेंगे।

तो देखा बच्चों, शब्दों का सही भावार्थ न समझने के कारण कैसे अर्थ का अनर्थ हो जाता है और अगर सही भाव समझ में आ जाए तो वही शब्द जीवन को परिवर्तन करनेवाले सिद्ध हो सकते हैं। जैसे सेठजी का जीवन बदल गया। अतः कभी भी किसी के शब्दों पर न जाकर उसके भाव को समझने का पुरुषार्थ करना चाहिए। □

ज्ञान ही जीवन को कलात्मक बनाता है

□ द्र. कु. 'पंचशीला' नरसिंहगढ़ (म.प्र.)

संसार में ज्ञान व ज्ञानवान मनुष्यों की कमी नहीं है, शास्त्रों में भी कोई कम बातें नहीं हैं परंतु उस ज्ञान का स्वरूप ज्ञाता व ज्ञेय दोनों का स्पष्ट न होने के कारण ज्ञान की यथार्थता नहीं रह जाती अर्थात् ज्ञान सिर्फ किताबी ज्ञान रह जाता है, व्यावहारिक नहीं बन पाता। सिर्फ कथनी व सुनने में आने वाले ज्ञान को ज्ञान नहीं कह सकते। फिर इसके अलावा साहित्य या विज्ञान का ज्ञान तो इस भौतिक जगत में जीविका अर्जित करने या विनाशी प्राप्ति हेतु ही सहयोगी है।

इस ज्ञान से आत्मकल्याण सम्भव नहीं, इसका मुक्ति व सुख-शांति की प्राप्ति से कोई संबंध नहीं है। तो वास्तव में यह यथार्थ ज्ञान कहा हुआ। आज समय की आवश्यकता है हर व्यक्ति शांति व सुख चाहता है, चिंताओं एवं मानसिक तनावों से मुक्ति चाहता है, जिसका समाधान दुनियावी ज्ञान व विज्ञान में नहीं है।

अतः वास्तविक ज्ञान तो स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ही आकर देते हैं। क्योंकि ज्ञान का अर्थ है समझ और समझ पैदा होने के बाद जीवन से त्रुटियों का निवारण हो जाता है, अतएव परमात्मा आकर आत्मा, परमात्मा, द्रामा के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देकर, बेहद विश्व का इतिहास सुनाकर हमें विशाल बुद्धि बना देते हैं। सत्य-असत्य का अंतर स्पष्ट कर कर्मों की गहन गति समझाकर, विकारों का त्याग व गुणों व शक्तियों की धारणा कराते हैं। जिससे आत्मा ज्ञान-स्वरूप अर्थात् अनुभवी मूर्त बन जाती है। अनुभवी आत्माएं ज्ञान के अनुभव की शक्ति से अन्य आत्माओं के भी जीवन परिवर्तन में सहायक बन जाती हैं।

दुनिया में तो मनुष्य सिर्फ कहते हैं ज्ञान शक्ति है, ज्ञान प्रकाश है, ज्ञान आय का स्रोत है। परंतु यहाँ हम आत्माएं शिवबाबा द्वारा दिए गये ज्ञान को आत्मसात कर व स्वरूप में धारण कर वास्तव में प्रयोगिक रूप में यह सिद्ध कर देते हैं कि "ज्ञान में शक्ति है, ज्ञान में प्रकाश है, ज्ञान आय का स्रोत है।"

1. ज्ञान प्रकाश है (Knowledge is light): शिवबाबा द्वारा दिया गया ज्ञान अति सूक्ष्म है और मनुष्य के विकारी व अंधकारमय जीवन को ज्ञान से प्रकाशित कर पावन बना देता है। अर्थात् अज्ञान और अविवेक का तम मिटा देता है, इस प्रकार यहाँ यथार्थ में ज्ञान की अभिव्यक्ति प्रकाश के रूप में होती है परंतु सिद्धांत है कि बिना किसी वस्तु के जले या आग में तप्त किये हुए उससे प्रकाश की उत्पत्ति नहीं होती। अतएव हम शिवबाबा के ज्ञानी तू वत्स यदि ज्ञान का प्रकाश फैलाना चाहते हैं तो हमें बाबा द्वारा बताए गये ज्ञान बिंदुओं को जीवन में धारण कर एक तपस्या का रूप देकर उस तप की अग्नि से आत्मा के विकारों के किचड़े को दग्ध कर स्वयं प्रकाशित हो सबको ज्ञान प्रकाश का दान देना है जिसके आधार से सभी के जनजीवन से निराशा व दुख का तम सदा के लिए मिट जाएगा और अन्य आत्माओं को मार्ग प्रशस्त होगा।

2. ज्ञान शक्ति है (Knowledge is might): ज्ञान आत्मा का भोजन है। जैसे शरीर को चलाने के लिए स्थूल भोजन लेते हैं, परंतु उस भोजन से शक्ति तभी मिलती है जब वह अच्छी तरह पचकर रक्त बन जाता है व शारीरिक ऊर्जा बन जाता है। उसी भांति इस ज्ञान की शक्ति का आभास हमें तभी होगा जब ज्ञान के हर बिंदुओं पर गहराई में जाकर हम विचार करेंगे, मनन-चिंतन करेंगे तथा उसे महीन बनाकर जीवन में धारण करेंगे या व्यवहारिक जीवन में समस्याओं, परिस्थितियों से जूझने व उनके समाधान में उसका प्रयोग करेंगे।

यदि ज्ञान सुनने या सुनाने तक ही सीमित है तो आत्मा की शक्ति का विकास नहीं होगा, ऐसी आत्मा के जीवन से बहुत-सी दुर्बलताएं स्पष्ट झलकेगी। साथ ही उसकी वाणी में शक्ति नहीं होगी। ऐसी आत्मा के जीवन का औरों पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। उसमें लौकिक मर्यादा, लोक-लाज के प्रति सदा संकोच रहेगा, वह आत्मा स्पष्टवादी, निष्पक्ष, निर्भीक व अचल नहीं रह सकती है। अतः यदि हम आत्माएं जीवन को शक्तिशाली व प्रभावी बनाना चाहते हैं तो उसका आधार है ज्ञान

की पूर्णता एवं परिपक्वता क्योंकि कहते भी हैं "अल्प ज्ञान अभिशाप है।" (A Short knowledge is a great curse) परंतु ज्ञान की पूर्णता तभी सम्भव है जब बाबा के महावाक्यों को हम जीवन का एक अंग बना लें, उस पर अपना अधिकार प्राप्त कर लें। अधिक-से-अधिक गहराई में जाकर अध्ययन कर उसे महीन बनाएं और अनुभव में लाएं और अनुभवी बन औरों को अनुभव कराएं। तब अन्य आत्माएं भी अनुभव कर कहेंगे कि ज्ञान में शक्ति है।

3. ज्ञान आय का श्रोत है (Knowledge is source of income): जब हम कहते हैं ज्ञान आय का श्रोत है तो सबसे प्रथम यह कहना उचित होगा कि ज्ञान अपने-आप में स्वयं एक धन है और अन्य सभी धन व खज़ानों को अर्जित करने का आधार यह ज्ञान धन ही है। पुनःश्च यह तो ऐसी निधि है जिसे चोर भी लूट नहीं सकता, जिसे कितना भी खर्च करो वह कम नहीं होता अर्थात् अखुट है। दुनिया में भी देखते हैं कि अल्पकाल की जीविकोपार्जन के लिए जितनी ऊंची जो शिक्षा प्राप्त करते उनको उतनी ऊंची नौकरी मिलती है, उनकी आय भी उतनी ही अधिक होती है। इसके अतिरिक्त सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में भी प्रशासनिक पद पर वही उच्चस्थ होते हैं जिनका बौद्धिक स्तर ऊंचा है, जो अधिक बुद्धिमान हैं। अतः आत्मा की उन्नति व आध्यात्मिक क्षेत्र की सफलता भी तभी सम्भव है जब हम ज्ञान की चोटी पर शीर्षस्थ होंगे अर्थात् ज्ञान की सूक्ष्मता व श्रेष्ठता को गहराई से मनन कर जीवन में धारण करेंगे और उस पर अधिकार पैदा कर दूसरों को अधिकार से सुनाएंगे व उनके जीवन में धारण कराएंगे और तब जिन आत्माओं का जीवन इस ज्ञान से परिवर्तित हो जाएगा, उन्हें सुख व शांति प्राप्त होगी तो वे अपना तन, मन, धन ईश्वरीय सेवा में लगायेंगे।

इस जन्म तो ज्ञान से आय होती ही है साथ ही भविष्य जन्मों के लिए भी हमें सुख-शांति व सतयुगी स्वराज्य की प्राप्ति होती है। अतः स्पष्ट है कि ज्ञान ही सर्व प्राप्तियों का आधार है।

4. ज्ञान की प्रखरता से ही परस्त्र शक्ति एवं निर्णय शक्ति आती है:—(१). किसी वस्तु को सही परखने के लिए उसके सर्व पहलुओं का ज्ञान ज़रूरी है। जीवन का सर्वांगीण व सूक्ष्म अध्ययन आवश्यक है और वह तभी सम्भव है जब ज्ञान की परिपक्वता हो।

जब ज्ञान की सूक्ष्मता में जाकर हम विभिन्न संस्कार, स्वभाव व गुण वाली आत्माओं के सम्पर्क में आते हैं तथा ज्ञान

की शक्ति का उन पर प्रयोग अथवा परीक्षण करते हैं तो हमारी बुद्धि तीक्ष्ण व मनोवैज्ञानिक बन जाती है, फिर एक अद्भुत परस्त्र-क्षमता हमारे में आ जाती है और हम सहज रीति-से किसी के मन के भावों व इच्छाओं को उसके मुख मंडल की रेखाओं से पढ़ सकते हैं। परस्त्र-शक्ति जीवन में बहुत आवश्यक है। इसी शक्ति से हम कुसंगत से स्वयं की रक्षा कर सकते हैं व हानियों से बच सकते हैं, इसके अतिरिक्त यह शक्ति प्रशासन हेतु परम आवश्यक है।

२. निर्णय शक्ति:—ज्ञान की सम्पूर्णता व दिव्यता जितना अधिक हमारे में आती जायेगी हम सहज व शीघ्र निर्णय लेने में सफल होंगे। मनुष्य आज किसी भी छोटी-सी समस्या व परिस्थिति में घबरा जाता है। हानि या अपमान की स्थिति में उसकी हृदय गति रुक जाती है, कई व्यक्ति पागल हो जाते हैं। कारण यही है कि ज्ञान उनकी आत्मा में शक्ति-स्वरूप व परिशोधित रूप में नहीं होता, सिर्फ अध्ययन किया हुआ होता है। परंतु परमात्मा द्वारा बार-बार ज्ञान की गहराई में ले जाने व उसको जीवन में धारण करने पर बल देने से वह ज्ञान जीवन का एक अंग बन जाता है एवं दिव्य तथा शक्तिशाली स्वरूप में निखरकर जीवन की समस्याओं एवं कठिनाइयों का सहज व सटीक हल ढूढ़ने में सहायक होता है। अतः ज्ञान से विलक्षण व शीघ्र निर्णय क्षमता आती है। निर्णय सही लेने के आधार से कम परिश्रम से पूर्ण सफलता मिलती है व अधिक हानियों से बच जाते हैं।

5. कुशल प्रशासन-कला ज्ञान से ही आती है:—दुनिया में भी बुद्धि की प्रखरता व कुशाग्रता के आधार से ही लोग दूसरों पर राज्य करते हैं। अतः सतयुगी राज्याधिकारी बनने व प्रशासन का आधार ज्ञान का चरमोत्कर्ष ही है क्योंकि प्रशासन करने हेतु ऊंच-नीच, अच्छे-बुरे का भलीभांति ज्ञान व सर्व को संतुष्ट करने, व उनसे कार्य लेने की विधि का ज्ञान आवश्यक है और वह परमात्मा द्वारा दिए गये अविनाशी ज्ञान को सूक्ष्मता से समझने पर ही होगा। प्रयोगिक रूप में हमारे सामने ज्वलंत उदाहरण के रूप में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की कुशल प्रशासन प्रणाली इस बात की साक्षी है कि ज्ञान की दिव्य शक्ति द्वारा लाखों आत्माओं पर बिना किसी बल प्रयोग या कानूनी सज़ा के किस प्रकार स्नेह व शांतिपूर्ण ढंग से प्रशासन किया जाना सम्भव है।

जबकि इस विद्यालय में विभिन्न जाति, वर्ग व भाषा-भाषी,

शेष पृष्ठ पर

अहंकार का बहिष्कार

ले० ब्रह्माकुमारी विद्या, कानपुर

उक्ति प्रसिद्ध है कि अहंकारी नर को एक दिन लज्जित होकर सिर नीचे अवश्य करना पड़ता है अथवा कि मनुष्य को जितना अधिक अभिमान होता है उसे अन्त में उतनी ही अधिक ऊँचाई से गिरने-जैसा दुःख अनुभव करना पड़ता है। उस समय उसकी सारी अकड़बाजी चूर हो जाती है और उसे बड़ी वेदना होती है। अतः मनुष्य को चाहिए कि अभिमान को छोड़ दे क्योंकि वास्तव में यह सब अभिमान मिथ्या है। अभिमानी मनुष्य तो उस सूखे और लम्बे बाँस की तरह है जो कि जंगल की अन्य बाँसों के साथ टकरा कर आग लग जाने से आखिर भस्मसात हो जाता है।

आज मनुष्य जिस धन का गर्व करता है कल वह धन उसका साथ छोड़ सकता है क्योंकि धन कोई एक-रस, स्थिर और अविनाशी चीज नहीं है बल्कि धन को चंचल माना गया है (Riches changes hands)। आज मनुष्य को जिस तन-शक्ति या जन-शक्ति का अभिमान है, वह भी तो एक दिन छोड़ जाने वाली है—ऐसा तो मनुष्य को दूसरों की जीवन-गाथा से भी मालूम होता है और प्रत्यक्ष भी देख पड़ता है। अतः जबकि संसार की ऐसी ही गति है तो फिर अभिमान किस बात का ?

अभिमान सभी विकारों का मूल है

भगवान् कहते हैं कि यह देह-अभिमान ही सभी पापों और विकारों का मूल है और इसलिए यही सभी तापों का और माया के शापों का भी मूल है। लोग तो पाँचों विकारों में से काम को सब से पहले और अहंकार को सबसे बाद में गिनते हैं परन्तु वास्तव में सबसे पहला विकार है अहंकार ही, क्योंकि इसी से ही दूसरे विकारों की भी उत्पत्ति होती है। देह का अभिमानी मनुष्य ही स्वयं को पुरुष के भान और दूसरे को स्त्री की दृष्टि से देखकर व्यक्तभाव को प्राप्त

होता है और वासनाओं के वश होता है अर्थात् काम रूप कटारी से दूसरे को काटता है। अभिमानी मनुष्य के अभिमान की भावना को ठेस लगने से ही उस में क्रोध पैदा होता है। पुनश्च, अपने अभिमान को, अपनी पोजीशन (position) और शान को बनाये रखने के लिए ही मनुष्य लोभ का और रिश्वत आदि का आसरा लेता है। फिर, जिन चीजों को वह अहंकार तथा लोभ के वश होकर इकट्ठा करता है, उनमें उसका मोह तो हो ही जाता है। इस प्रकार, स्पष्ट है कि अहंकार अन्य सभी विकारों का बीज है। अतः परमपिता परमात्मा कहते हैं कि अब अभिमान को तथा देह-अहंकार को छोड़कर देही-अभिमानी (soul-conscious) बनो।

अहंकार का भविष्य

अब हम परमपिता परमात्मा द्वारा जान चुके हैं कि शीघ्र ही इस पुरानी, कलियुगी दुनिया का महाविनाश होने वाला है और सतयुगी पावन दुनिया स्थापन हो रही है। यह बात हमारे सामने बिल्कुल स्पष्ट है, यह कोई कल्पना नहीं है। परमपिता शिव ने अब यह भी समझाया है कि इस संगम समय में जो जितना निरभिमानी और नम्र-चित्त बनेगा उसका जीवन उतना ही श्रेष्ठ बनेगा और वह आने वाली पावन तथा दैवी सृष्टि में उतना उच्च देव पद प्राप्त करेगा। फिर, नम्र-चित्त मनुष्य का प्रत्यक्ष फल हम इस जीवन में भी देख रहे हैं कि वह शान्त और प्रिय होता है और उसे यम का भय भी नहीं होता। अतः जबकि अहंकारी का परिणाम और निरहंकारी की प्रारब्ध दोनों हमारे सामने हैं और जबकि इस अहंकारी सृष्टि का विनाश होना ही है तो उनका अहंकार करना गोया मूर्ख बनना ही है। इसलिये जैसे परमपिता परमात्मा निराकार और निरहंकार हैं और इस कारण बहुत ही लोकप्रिय हैं, वैसे ही हमें भी अब निज ज्योति-बिन्दु स्वरूप में

स्थित होना चाहिए क्योंकि इस पुरुषार्थ से हा हम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। अब हमें जीते-जी अपने अहंकार को मारना चाहिए तभी हमें जीवन्मुक्ति पद की तथा अत्यन्त सुख की प्राप्ति होगी। अहंकारी मनुष्य तो उस अति सुखमय देव-सृष्टि में जा ही नहीं सकता बल्कि उसे तो धर्मराजपुरी में दण्ड भोगना पड़ता है। तो जबकि अहंकारी तथा निरहंकारी दोनों का भविष्य स्पष्ट रूप से हमारे सामने है तो हमें चाहिए कि अब हम नम्रचित्त और निरहंकारी बनें तथा देह-अभिमान को छोड़कर देही-निश्चय (soul-consciousness) में स्थिति प्राप्त करें।

परमपिता परमात्मा शिव की शुभ सम्मति

परमपिता परमात्मा कहते हैं कि आज विश्व में अज्ञान्ति की सारी समस्या अहंकार ही के कारण है। कोई स्वयं को सेठ-स्वामी माने बैठा है तो कोई धनी-दानी। कोई स्वयं को नेता मानकर अभिमान कर रहा है तो कोई अभिनेता। इस प्रकार सभी अहंकार के नशे में चूर हैं। उन्हें यह मालूम ही नहीं है कि सतयुग में दास-दासियाँ भी इनसे अधिक सुखी होती हैं, उनके पास भी सोने के महल होते हैं। उस दैवी मर्यादा वाली सृष्टि में न कोई किसी का अपमान करता है और न किसी को किसी चीज का अभिमान होता है। निरभिमानी बनने के कारण ही तो उनकी इतनी उच्च प्रारब्ध होती है। अतः जबकि हमारी उस उच्च स्थिति से हमें अभिमान ने ही गिराया है तो उस गिरी हुई स्थिति में प्राप्त तमोगुणी वस्तुओं का अभिमान करना तो निरी मूर्खता है। हमें तो मन में यह सोचना चाहिये कि आज सतयुग के स्वर्ण महल की भेंट में हमारे पास जो मिट्टी-महल है, सुखमय और डबल ताज वाले देव पद की बजाय काँटों के ताज वाला धनवान अथवा नेता पद है और वहाँ के फूल-प्रूफ (fool-proof) विमान की बजाय जो कार है, यह सब बेकार है क्योंकि इनका संचय करने के पीछे कोई न कोई विकार है और इनके साथ दुःख लगा हुआ है। सतयुगी हीरे-तुल्य जीवन की भेंट में तो वर्तमान जीवन कौड़ी-तुल्य है ! अतः इसका अभिमान कैसा ?

अतः परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं कि—

‘हे वत्स, मैं थोड़े समय के लिये ही तो अब इस

सृष्टि में आया हूँ। मैं अधिक समय तो यहाँ ठहरता भी नहीं हूँ क्योंकि शीघ्र ही सतयुगी पावन सृष्टि की स्थापना करके मुझे जाना है। अतः सारे कल्प की आयु की भेंट में मैं कह सकता हूँ कि मैं एक घड़ी-भर के लिये ही आप मनुष्यात्माओं की इस सृष्टि में आया हूँ। अब छोटे-बड़े सभी के सिर पर काल खड़ा है क्योंकि सब मानो मरे ही पड़े हैं, अब इनके विनाश में कोई अधिक समय शेष नहीं है। अतः जबकि इस भंभोर को आग लगनी ही है तो उस समय आप कोई पुरुषार्थ नहीं कर सकोगे। पुरुषार्थ का समय तो उससे पहले है अर्थात् यह दो घड़ियाँ ही हैं। अतः अब यह अभिमान छोड़ दो कि मैं नेता हूँ, विद्वान हूँ, सेठ हूँ, समझदार हूँ, आदि-आदि। अब इनकी ओर मन को केन्द्रित न करके मेरी ओर अटेन्शन (attention) दो ! अब यह सब कुछ मेरे अर्पण करके आप ट्रस्टी अर्थात् निमित्त होकर इनसे कार्य लो। अब देह का भी अभिमान छोड़ दो और सर्वस्व सहित मेरे हो जाओ तो मेरा सब-कुछ आपका हो जायगा। बताओ क्या इतना सस्ता और लाभदायक सौदा भी स्वीकार नहीं है ?



जहांगीरपुरी (दिल्ली): में विश्व नवनिर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के बाद चित्रों पर समझते हुए भ्राता महेंद्र सिंह जी, मेट्रोपोलिटन कार्यालय, दिल्ली।

लाइन क्लीयर

स्टेशन पर जब रेलगाड़ी पहुंचती है तो मुसाफिर, गाड़ी से उतरकर प्लेटफॉर्म पर टहलने लगते हैं। कोई तो पानी पीने लगता है, कोई चाट-पकौड़ी लेकर खाने लगता है और कोई चाय के स्टॉल पर जाकर चाय पीने लगता है। जिसकी जो इच्छाएं और आवश्यकताएं होती हैं उन्हीं की पूर्ति के लिए वह सक्रिय हो जाता है। कई बार तो ऐसा भी हो जाता है कि वह खाने-पीने में ऐसा तल्लीन हो जाता है कि गाड़ी भी छूट जाती है। और कई बार वह रुका भी रहता है क्योंकि जब तक सिग्नल (Signal) डाउन न हो और जब तक लाइन क्लीयर न मिले तब तक गाड़ी रुकी रहती है। वह वहां से एक इन्च भी आगे नहीं बढ़ती। तब मुसाफिर गॉर्ड से, टी-टी से, ड्राइवर से पूछताछ करते हैं कि गाड़ी क्यों रुकी हुई है, वह चलती क्यों नहीं ?

उन्हें उत्तर मिलता है कि अभी लाइन क्लीयर नहीं मिला, अभी सिग्नल डाउन नहीं हुआ। जब तक लाइन क्लीयर न हो तब तक गाड़ी नहीं चल सकती।

ठीक इसी तरह, जो लोग आध्यात्मिक मार्ग पर अपनी जीवन-रूपी गाड़ी को ले जाते हैं, वे कुछ आगे उन्नति करने पर, किसी अवस्था तक पहुंचने पर, मानो किसी स्टेशन तक पहुंचने पर, वे कई बार खाने-पीने में अथवा अपनी पुरानी इच्छाओं को पूर्ण करने में लग जाते हैं और परिणाम यह होता है कि वैकुण्ठधाम की यात्रा की गाड़ी से वे चूक जाते हैं।

कई बार ऐसा भी होता है कि मनुष्य का अहंकार-

रूपी सिग्नल डाउन नहीं होता अथवा उसकी बुद्धि की लाइन क्लीयर नहीं होती। अर्थात् वह कभी देह को, कभी विषय-पदार्थों को, कभी दैहिक सम्बंधों को याद करने लग जाती है और इस प्रकार याद-रूपी लाइन या पटरी क्लीयर न होने के कारण उसका पुरुषार्थ वहीं रुक जाता है। उसकी अवस्था आगे नहीं बढ़ पाती। वह वहीं-का-वहीं रुक जाता है। वह अन्य पुरुषार्थियों से पूछता है कि— "क्या कारण है कि मेरी स्थिति में उन्नति नहीं हो रही, उसमें हर्ष की एवं आनंद की वृद्धि नहीं हो रही ?" इसके बारे में परमपिता परमात्मा समझाते हैं कि— "हे वत्स, जब तक तुम्हारी बुद्धि की लाइन क्लीयर नहीं होगी अर्थात् जब तक तुम मेरी एकांतिक (Single-minded) एवं अमिश्रित (Un-mixed) याद में नहीं रहोगे और जब तक व्यर्थ या अशुद्ध संकल्पों में उलझे रहोगे तब तक यह पुरुषार्थ की गाड़ी यहीं रुकी रहेगी, यह आगे नहीं बढ़ पायेगी।"

अतः हम सभी को अपने हृदयों को टटोलना चाहिए, कि हमारी याद-रूपी लाइन पर कोई रुकावट तो नहीं, उस पर कोई पत्थर या रोड़े तो नहीं पड़े हुए, उसमें कहीं तोड़-फोड़ तो नहीं हो रही ? वरना कोई दुर्घटना होने की, गाड़ी के पटरी पर से उतर जाने की अथवा अन्य कोई हादिसा होने की आशंका रहेगी अर्थात् बुद्धि के मायावी एवं विकारी होकर कोई अकर्तव्य करके दंडित होने की अथवा योग के आनंद से गिरकर नीरस अवस्था को भोगने की आशंका रहेगी। यह बात हमें अच्छी प्रकार समझकर सदा अपनी याद-रूपी पटरी को क्लीयर ही रखना चाहिए ताकि शीघ्र ही और दुर्घटना के बिना ही हम अपनी मंजिल तक पहुंच जायें। □



दिल्ली (कृष्णनगर): की ओर से 'मिनिमन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' अभियान के उपाध्यक्ष में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। उत्पादन परवान 'बोर्डेशनल ट्रेनिंग सेंटर' के संचालक प्राणा धर्मपाल जी, बी.के. कमलमणि, बी.के. जगरूप तथा अन्य दिखाई दे रहे हैं।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

□ ब्र. कु. लक्ष्मण एवम् ब्र. कु. सत्यनारायण,
कृष्णानगर देहली., द्वारा संकलित

देहली में आध्यात्मिक मेलों द्वारा जन-जन को संदेश पाण्डव भवन (देहली): 'सुख-शांति अनुभूति मेले' का आयोजन करोलबाग अजमलखा पार्क में २० से २९ सितम्बर, ८६ तक किया गया उसके उद्घाटन में दादी चंद्रमणि जी तथा सुप्रीमकोर्ट के माननीय न्यायाधीश भ्राता नटराजन उपस्थित थे। मेले को देखनेवालों में काउंसलर, मार्केट एसोसिएशन के प्रेजीडेंट, उद्यान विभाग के चेयरमैन का नाम उल्लेखनीय है। इस मेले में ४०० के लगभग व्यक्तियों ने राजयोग शिविर किया। और समापन समारोह में डिप्टी वेलफेयर मिनिस्टर श्री सिरधर शोमागो ने भाग लिया।

शालीमार बाग (दिल्ली): सेवाकेंद्र की ओर से १० अक्टूबर तक विश्व एकता शांति मेले का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन केंद्रीय प्रामोण विकास राज्यमंत्री भ्राता रामानंद यादव तथा राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी के द्वारा करवाया। उद्घाटन समारोह में दिल्ली नगरनिगम के पार्षदों, भ्राता मंगतराम सिंगल, भ्राता राजेश यादव, भ्राता दीपचंद बंधु आदि ने भाग लिया।

इस मेले से लगभग ५००० आत्माओं ने लाभ उठाया, तथा लगभग २५० आत्माओं ने राजयोग शिविर किया और सभी से विश्वशांति अभियान के फॉर्म भी भरवाये।

१० अक्टूबर को 'वीर अर्जुन' पत्रिका के मुख्य सम्पादक भ्राता देवेन्द्र जी प्रेस 'इन्फारमेशन ब्यूरो' के सहायक निदेशक व भारतीय जनता पार्टी की दिल्ली प्रदेश की संयोजक बहन कमल शर्मा आदि ने मेले के समापन समारोह में भाग लिया।

राजापार्क (जयपुर): नवरात्रों में सेवाकेंद्र की ओर से चैतन्य देवियों की झांकी एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। भ्राता राजेंद्र कृष्ण भार्गव 'आल इंडिया बिल्डर्स एसोसिएशन' राजस्थान चेप्टर के अध्यक्ष ने उद्घाटन करते समय अपने उद्गार व्यक्त करते कहा कि यहां आकर मेरी काफी भ्रातियां मिटीं—स्व परिवर्तन द्वारा ही उत्थान सम्भव है।

मोदी नगर: विश्वशांति अभियान के अंतर्गत मोदी नगर और मुराद नगर की ओर से कुल ७० डिग्री कॉलेज, इंटर कॉलेज,

हाईस्कूल और जूनियर स्कूलों में प्रार्थना द्वारा शांति के क्षण एकत्रित किये गये। इसके अतिरिक्त मंदिरों, मस्जिदों, गिरजाघरों, क्लबों तथा गांव-गांव में जाकर सम्पर्क द्वारा प्रोग्राम रखकर शांति के क्षण इकट्ठे किये।

आगरा: विश्वशांति अभियान के अंतर्गत किये गये समारोह में 'स्वराज्य टाइम्स' के प्रधान सम्पादक भ्राता आनंद शर्मा जी पधारे थे और उद्घाटन के बाद मेडिकल एसोसिएशन आगरा के अध्यक्ष एवं प्रमुख समाजसेवी डॉ. श्रीमती आर.के. वर्मा जी ने सभा में शांति अभियान अपील स्वयं पढ़कर सुनाई और १० मिनट शांति में रहने की स्वयं प्रतिज्ञा ली और नर्सिंग होम में प्रत्येक रोगी एवं सहयोगी से संकल्प लेने के लिए कहा।

माननीय सम्पादक आनंद शर्मा जी ने भी निरंतर कई बार अपने समाचारपत्र में शांति अपील छापी जिससे हज़ारों लोगों द्वारा शांति में रहने की प्रतिज्ञाएं लेने के पत्र सेवाकेंद्र पर आये। हाथरस, नैनीताल तथा भरतपुर तथा आगरा के भाई-बहनों के शांति सेवादल के रूप में गांव-गांव, शहर-शहर में जाकर शांति अभियान द्वारा शांति के क्षण एकत्रित किये।

जयपुर (किशनपोल): सेवाकेंद्र द्वारा एडवोकेट जनरल, मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष—कॉलेज के प्रिंसीपल, राजस्थान के विधायकगणों तथा मंत्रियों से तथा स्कूल और अन्य सभाओं में जाकर शांति के क्षण इकट्ठे किये और कोटपूतली, साभरलेक तथा टोंक से भी वहां के प्रतिष्ठित व्यक्तियों, समाजसेवियों तथा स्कूल आदि में जाकर शांति के क्षण इकट्ठे किये गये।

लखनऊ: विश्वशांति अभियान के उपलक्ष्य में उत्तरप्रदेश के ऊर्जा मंत्री भ्राता सुनील शास्त्री जी तथा गृहमंत्री भ्राता सुरेंद्र सिंह चौहान ने विश्वशांति यात्रा में भाग लेनेवाले भाइयों को पट्टे पहनाकर दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन किया—झंडा भाइयों को देते समय चौहान साहब ने उत्साहवर्द्धक शब्दों में संपूर्ण विश्व को एक सूत्र में बांधने के प्रयास का संकल्प दोहराया और ब्रह्माकुमारी आश्रम के सभी अच्छे कार्य में सहयोगी रहने का भी संकल्प लिया।

काठमांडू: १६ सितम्बर सायंकाल विश्वशांति भवन में शांति-दान कार्यक्रम का उद्घाटन करते समय नेपाल के एम.पी. भ्राता पद्म रतनतुलाधर जी ने कहा, "शांति का एक उपाय राजयोग ही है" और स्वयं फॉर्म भरवाने की सेवा का संकल्प लेकर पचास फॉर्म भरवाने के लिये अपने साथ ले गये।

मुज़फ्फरपुर: सेवाकेंद्र पर ही विश्वशांति-दान अभियान का कार्यक्रम रखा, बिहार यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर माननीया श्रीमती ललिता जी ने उद्घाटन किया—कार्यक्रम में भाग लेनेवालों में चर्च के फादर ने भी इसमें सहयोग देने का संकल्प लिया और समापन समारोह में महंत गिरिजानंदन जी ने भी अपने संपर्क में आनेवालों को प्रेरणा देकर शांति के क्षण इकट्ठे किए।



मेहसाना: में विश्वशांति अभियान शुभारंभ समारोह का उद्घाटन कर रहे हैं। सहायक जज भ्राता एस.बी. चोरा जी।

मेहसाना: सेवाकेंद्र द्वारा आयोजित विश्वशांति अभियान के समारोह का उद्घाटन करते समय सहायक जज साहब ने अपने भाषण में कहा कि एक-एक मिनट की 'पीस अपील' कोई कम बात नहीं—शांति का एक मिनट विश्व में चमत्कार कर सकता है। अतिथि विशेष सहायक कलेक्टर भ्राता देसाई जी ने कहा कि सामूहिक राजयोग के अभ्यास के कार्यक्रम जगह-जगह रखने चाहिए और शांति के वायब्रेशन विश्व में फैलाने का कार्यक्रम रखते रहना भी अपने में बहुत बड़ी सेवा है।

अहमदाबाद: विश्वशांति अभियान का उद्घाटन गुजरात के महामहिम राज्यपाल भ्राता आर.के. त्रिवेदी के द्वारा हुआ और राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि दादी जी भी विशेष रूप में आमंत्रित थीं—इस सभा में २०० फॉर्म शांति-दान के

भरवाये गये। और इसके बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस रखी गई जिसमें १८ पत्रकारों ने भाग लिया—कार्यक्रम का प्रसारण टी.वी. पर भी दर्शाया गया। विशाल कौमी एकता के कार्यक्रम में मुख्यमंत्री भ्राता अमर सिंह चौधरी उपस्थित थे जिसमें ब्रह्माकुमारी सरला बहन को विशेष आमंत्रित किया गया था उसमें भी सरला बहन ने शांति अभियान के लिये तथा विश्व-एकता का संदेश दिया।



नाडियाद: लायन्स क्लब की रजत जयंति समारोह में बी.के. पूर्णिमा बहिन भाषण करते हुए।

सिरसी: कर्नाटक के मुख्यमंत्री भ्राता रामकृष्ण हेगडे के बर्थ-डे पर विश्वशांति अभियान के अंतर्गत मिलने गये—शांति का संदेश सुनने के बाद मुख्यमंत्री जी ने कहा, "मैं अभी वानप्रस्थी बन गया हूँ—मैं अवश्य ही लक्ष्म लूंगा" और दो मिनट शांति में बैठकर ब्रह्माकुमारी आश्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

पुरी: विश्वशांति अभियान के तहत पुरी सेवाकेंद्र की ओर से ५० किलोमीटर की शांति यात्रा निकाली गई। रास्ते में १५ स्कूलों में कार्यक्रम रखे गए।

कटक: सेवाकेंद्र की ओर से उड़ीसा हाईकोर्ट के अवकाश प्राप्त मुख्य विचारपति भ्राता वी.के. महंती एवं जिला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता यज्ञेश्वर दास जी के द्वारा विश्वशांति अभियान का उद्घाटन करवाया—और कटक के सभी समाजसेवी संस्थाओं के मुखियों के सहयोग से गांव-गांव, गली-गली में शांति का संदेश पहुंचाया। २१ सितम्बर को उड़ीसा हाईकोर्ट के माननीय मुख्य न्यायाधीश भ्राता एच.एल. अग्रवाल तथा उड़ीसा के शिक्षामंत्री भ्राता जे.एन. महापात्र जी की अध्यक्षता में १६ भाई-बहन शांतिदूत के रूप में उन्हें

मिदनापुर: तमलुक सेवाकेंद्र की ओर से दुर्गापूजा के उपलक्ष्य में एक चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, उसका उद्घाटन पुलिस अधीक्षक ने किया। उसे देख वह और उसकी धर्मपत्नी ने प्रदर्शनी की बहुत सराहना की। □

बंगलौर: विश्वेश्वरपुरम् के सेवाकेंद्र की ओर से विश्वशांति अभियान के अंतर्गत एक आयोजन किया गया जिसमें कनार्टक विधानसभा के अध्यक्ष, नगरनिगम के मेयर की अध्यक्षता में हुआ। अपने भाषण में विधानसभा के अध्यक्ष ने कहा कि ब्रह्माकुमारी आश्रम गांव से शहर तक सभी वर्गों को आंतरिक शांति के अनुभव कराने की सेवा करता है जो आज के समय की अति आवश्यकता है।

श्रीगंगानगर: सेवाकेंद्र की ओर से रायसिंह नगर, पन्नपुर, गजसिंहपुर मंडी, करनपुर, केसरीसिंह पुर, मिर्जावाला आदि स्थानों पर प्रदर्शनी लगाई गई—इसके अलावा स्कूल, कॉलेज की भी सेवा का चांस लिया।

बीकानेर: अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष १९८६ के अंतर्गत सेवाकेंद्र की ओर से नवरात्रि महोत्सव के उपलक्ष्य में नौ देवियों की झांकी एवं विश्वशांति की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें राजस्थान प्रदेश कांग्रेस (आई), के महासचिव भ्राता भवानीशंकर जी शर्मा, डॉ. सी.एल. हर्ष, डॉ. एच.सी.

सक्सेना, व्यापार-मंडल के सचिव भ्राता सोमदत्त जी श्रीमाल तथा डॉ. के.डी. शर्मा डूंगर कॉलेज के प्रिंसिपल आदि ने अवलोकन किया तथा संस्था की सेवाओं की प्रशंसा की।

कलकत्ता: जगप्रसिद्ध दुर्गापूजा के उत्सव पर कलकत्ता रायबगान की ओर से 'स्वर्णिम जयति राजयोग पांच दिवसीय मिनी मेले' का आयोजन किया गया—जिसका उद्घाटन कलकत्ता के शेरीफ भ्राता डॉ. जी.के. सर्राफ विधायक भ्राता देवकीनंदन पोद्दार तथा राजयोगिनी दादी निर्मलशांता जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। इस मेले को लाखों की संख्या में आत्माओं ने देखा।

भुवनेश्वर: विश्वशांति अभियान के तहत सेंट्रल जेल में एक आयोजन हुआ उसमें भू.पू. दस्युराज वर्तमान ब्रह्माकुमार पंचमसिंह ने अपने अनुभव द्वारा सुख-शांति का मार्गदर्शन कराया और अच्छे नागरिक बनने की प्रेरणा दी। विश्वशांति अभियान का समापन समारोह में वित्त एवं विधिमंत्री भ्राता गंगाधर महापात्र जी तथा रामकृष्ण मट्ट के स्वामीभक्तानंद जी महाराज की अध्यक्षता में किया गया—समारोह के अवसर पर पधारें हुए भुवनेश्वर मारवाड़ी पंचायत के अध्यक्ष को राजस्थानी आध्यात्मिक सम्मेलन में भाग लेने के लिए निमंत्रण दिया गया। जिसे उन्होंने बड़े प्यार से स्वीकार किया।



हेन्कनाल : 'मिलियन मिनिट्स आफ पीस अपील' अभियान के अन्तर्गत उड़ीसा के भिन्न-भिन्न भागों में निकाली गई शांति यात्रा की दृश्य।



मानसा : विश्वशांति प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर बी.के. सुदेश, कमलेश, कैलाश तथा तहसीलदार जी

क्लश और झंडे दिए गए और पीस बस से उन्होंने शांति का संदेश देने की सेवा शुरू की।

इलाहाबाद: १६ सितम्बर को विश्वशांति अभियान का शुभारंभ उत्तरप्रदेश के वरिष्ठ न्यायामूर्ति भ्राता प्रेमशंकर गुप्ता जी द्वारा कराया गया। इस कार्यक्रम में उप-आयुक्त भ्राता दशरथ नारायण जी शुक्ला भी कार्यक्रम में भाग लेने आये थे—मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए गुप्ता जी ने कहा कि शांति मनुष्य मात्र की स्वाभाविक आवश्यकता है—मनुष्य सदा इसके लिए प्रयत्नशील भी है। परंतु ब्रह्माकुमारी आश्रम की सेवाओं में मेरी आस्था है क्योंकि यह शांतिपूर्ण तरीकों से ही शांति का अभियान चला रही है और उप-आयुक्त शुक्ला जी ने भी अपनी मंगलकामनाएं इस कार्यक्रम की सफलता के लिए दीं।

ब्रह्मपुर (गांधी नगर): सेवाकेंद्र की ओर से शांति वर्ष के उपलक्ष्य में १० आध्यात्मिक संस्थाओं को आमंत्रित किया गया—जिसमें जामा मस्जिद के भ्राता इमाम हाफिज़ साविर हुसैन, चिन्मया मिशन के भ्राता भीमसेन, कैथोलिक चर्च के फादर जेम्स, डिवाइन लाइफ सोसाइटी, गुरुद्वारा सिंह सभा, थियोसोफिकल सोसाइटी, सतसाई बाबा, अरविंद घोष आश्रम आदि के सभी प्रमुख व्यक्तियों ने बड़ी रूचि से भाग लिया और सहयोग देने का आश्वासन दिया।

सूरतगढ़: अंतर्राष्ट्रीय विश्वशांति अभियान के अंतर्गत तीन शांति यात्राएं, और पांच प्रदर्शनियां लगाई गईं—और जेल में भी एक विशेष आयोजन किया गया। कई जगह से निमंत्रण सेवाकेंद्र खोलने के भी मिले।

डोम्बीवली: १६ सितम्बर से ही डोम्बीवली शहर के करीब ५० स्कूल, छोटे-बड़े मंदिर, रोटरी क्लब, लायंस क्लब, अस्पतालों, डिस्पेंसरियों, नगरपालिका, महिला मंडलों तथा नगर में तथा गांव में घर-घर जाकर सभी भाई-बहनों ने विश्वशांति अभियान के अंतर्गत बहुत अच्छी सेवा की और इसी के अंतर्गत तीन प्रदर्शनियां का भी आयोजन किया गया।

मुलुंद (बम्बई): सेवाकेंद्र की ओर से शांति का संदेश देने हेतु माण्डुप से थाना तक शांति यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें २०० भाई-बहनों ने भाग लिया और इस दौरान १०,००० पच्चे बाटे गए।

चंद्रपुर: सेवाकेंद्र की ओर से जेल, स्कूल, कोर्ट तथा मंदिरों में जाकर विश्वशांति अभियान के अंतर्गत शांति के क्षण इकट्ठे किए गए।

कानपुर: नया गंज सेवाकेंद्र की ओर से विश्वशांति वर्ष के उपलक्ष्य में कानपुर की शिक्षण संस्थाओं, कीर्तन मंडली—बैंक तथा सरकारी कार्यालयों तथा अन्य छोटे-बड़े सभी विद्यालयों की बालिकाओं एवं बालकों से प्रार्थना द्वारा शांति के क्षण इकट्ठे करने का अभियान चलाया। ऐसे ही हरदोई (सीतापुर) मिश्रित, गोला गोकर्णनाथ तथा संडीला आदि में साइकिल यात्रा तथा पदयात्रा द्वारा—नगर-नगर तथा गांव-गांव में जाकर वहां के प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं स्कूलों आदि में प्रवचन-प्रदर्शनी आदि लगाकर शांति अभियान के तहत विश्वशांति के कार्यक्रम रखे गए।



राजापार्क (जयपुर): सेवाकेंद्र पर आयोजित चैतन्य दशियों की झांकी एवं प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् भ्राता भार्गव जी आल इंदिया बिल्डर्स एसोसिएशन के राजस्थान चेंटर के अध्यक्ष प्रदर्शनी समझ रहे हैं।

नडियाड सेवाकेंद्र की ओर से आयोजित विश्वशांति के समारोह की अध्यक्षता खेड़ा जिला के कलेक्टर भ्राता रवि सक्सेना ने की समारोह में नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को १ मिनट से ५ मिनट तक शांति-दान करने के लिए अनुरोध किया।

भोरवी: सेवाकेंद्र पर ही विश्वशांति समारोह का आयोजन किया गया—जिसमें १०० आत्माओं से भी अधिक ने लाभ लिया। तत्पश्चात् इंटर कॉलेज स्कूल, क्लबों से संपर्क करके शांति के क्षण इकट्ठे किये।

जालना: विश्वशांति अभियान का आयोजन जिला जालना के कलेक्टर महोदय की अध्यक्षता में किया जिसमें १००० आत्माओं ने उपस्थित होकर लाभ उठाया और इसी उपलक्ष्य में शांति यात्रा भी निकाली गई।

पटना: सेवाकेंद्र की ओर से दुर्गापूजा के शुभ अवसर पर दानापुर में मिलिट्री एरिया में लगाई गई दुर्गामाता की झांकी के सामने चरित्र निर्माण की प्रदर्शनी लगाई गई जिसे लाखों आत्माओं ने देखा—पटना में विश्वशांति अभियान का आयोजन बिहार के राज्य वित्तमंत्री डॉ. विजय सिंह जी की अध्यक्षता में किया।

खण्डवा: विश्वशांति अभियान के अवसर पर रोटरी क्लब में ब्रह्माकुमारी सरिता जी ने विश्वशांति अपील का महत्व बताते हुए संस्था का विस्तारपूर्वक परिचय देकर सभी से शांति के फॉर्म भरवाये।

सीकर: सेवाकेंद्र की ओर से विश्वशांति अभियान के अंतर्गत

२-३ स्थानों पर प्रदर्शनी लगाई गई—जेल में जाकर भी शांति के क्षण इकट्ठे किये।

अकोला: विश्वशांति अभियान का आयोजन शहर के सुप्रसिद्ध न्यूरो सर्जन डॉ. अरुण भागवत जी की उपस्थिति में किया गया। नगर के गणमान्य व्यक्तियों ने इस आयोजन में बड़े उत्साह तथा हर्ष के साथ भाग लिया।

उधमपुर: विश्वशांति अभियान के अंतर्गत उधमपुर सेवाकेंद्र की ओर से १५ विभिन्न गांवों में राजयोग प्रदर्शनियों का आयोजन किया और प्रदर्शनी में आनेवालों से शांति-दान के फॉर्म भरवाये।

उमरेड: सेवाकेंद्र की ओर से एक सार्वजनिक कार्यक्रम का शहर के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में आयोजन किया। ५००० आत्माओं से शांति के फॉर्म भरवाये तथा इसके अलावा स्कूल-कॉलेज तथा गांवों में जाकर भी कार्यक्रम रखे गये।

ऊंझा: सेवाकेंद्र की ओर से विसनगर में विश्वशांति अभियान के निमित्त जिला आचार्य संघ की मीटिंग में प्रवचन का कार्यक्रम रखा जिसमें ३०० आचार्यों ने भाग लिया, उन्हें शांति का संदेश दिया। ऊंझा शहर में भी ऊंझा नगरपालिका संचालित सर्वप्राथमिक शालाओं के शिक्षकों के लिए प्रवचन रखा जिसमें १५० शिक्षकों ने लाभ लिया।

बिल्लीमोरा: सेवाकेंद्र के समीप कछोली गांव में विश्वशांति अभियान के अंतर्गत ६ दिवसीय शांति शिविर का आयोजन किया और शिविर में भाग लेनेवाले सभी भाई-बहनों ने शांति का दान देकर कार्यक्रम को सफल बनाया।



धाना: गोल्डन जुबली के निमित्त धाना में किये गये सार्वजनिक समारोह का उदघाटन करने हुए महापौर दत्ता जी नल्लवेंड जी।

दुविधा में दोनों गये, माया मिली न राम

आज मनुष्य बहुत ही दुविधा में है। एक ओर तो वह वर्तमान नारकीय संसार की चमक-दमक और वैभवों-वासनाओं से आकर्षित होता है। उनमें आसक्त होने से उसे परमपिता परमात्मा के स्वरूप की विस्मृति हो गई है। परिणामस्वरूप वह दुःखी और अशांत है। दुःखी होकर वह स्वर्गिक सुखों के दाता परमपिता परमात्मा की ओर ताकता है और उसके मन में यह इच्छा होती है कि ज्ञान और योग के द्वार में प्रवेश करके बैकुण्ठ में देवपद प्राप्त करूं। यह सुनकर कि अब परमपिता परमात्मा स्वयं उसको बैकुण्ठों के सुखों के लिए आमंत्रित कर रहे हैं और उसके लिए सहज ज्ञान और सहज राजयोग के द्वार पर उसका बिछड़े हुए बच्चे की तरह स्वागत करने के लिये खड़े हैं। परंतु जन्म-जन्मान्तर से उसे माया की जो लत पड़ी हुई है, उसके कारण उसे ऐसा लगता है कि माया भी उसे अपनी ओर स्वागत कर रही है। उसका निर्मंत्रण स्वीकार किये बिना भी उसका मन नहीं मानता। इस प्रकार कई मनुष्यों के इस अंतिम जीवन का शेष रहा हुआ थोड़ा-सा समय दुविधा में ही चला जा रहा है। इस समय को गँवा कर वह 'राम' अर्थात् निराकार परमपिता परमात्मा का निर्मंत्रण स्वीकार करने से तथा उन्हें मिलने से तो वञ्चित होयेंगे ही परंतु अब निकट भविष्य में वर्तमान मायावी सृष्टि का जो महाविनाश होने ही वाला है, उसके परिणामस्वरूप माया का निर्मंत्रण भी तो निश्चित रूप से समाप्त होने ही वाला है। अतः किसी ने सच कहा है कि "दुविधा में दोनों गये, माया मिली न राम।" अब माया अर्थात् विकार तो वैसे भी रहने नहीं हैं, अतः मनुष्य को चाहिए कि दुविधा को छोड़कर रामेश्वर (शिव) परमात्मा का ज्ञान-योग संबंधी निर्मंत्रण स्वीकार कर बैकुण्ठ का प्रवेश-अधिकार प्राप्त करे। □



सिवनी (म.प्र.): में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन विधायिका प्रभा मार्गव द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया।

जगन्नाथपुरी: 'अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष' के उपलक्ष्य में योग भट्टी का उद्घाटन नगरपालिका के अध्यक्ष जी कर रहे हैं।



चंद्रपुर: में 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' के सार्वजनिक कार्यक्रम में भ्राता सवाई जी, जिला एवं सत्र न्यायाधीश अपने विचार प्रकट कर रहे हैं।





बड़ोदा: में विश्वशांति अभियान के उद्घाटन समारोह में 'शांति' विषय पर प्रवचन करती हुई बी.के. राज जी।



सीकर: सेवाकेंद्र की ओर से गांधीनगर में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी के चित्रों पर समझाती हुई ब्र.कु. पुण्या जी।



अकोला: में विश्वशांति अभियान समारोह का उद्घाटन डॉ. भागवत, न्यूरो सर्जन डॉ. महेश्वरी जी तथा ब्र.कु. रुकमणि जी द्वारा सम्पन्न हुआ।



सम्बलपुर: 'मिलियन मिनिट्स ऑफ पीस अपील' अभियान के निमित्त हुए कार्यक्रम में ब्र.कु. पार्वती जी प्रवचन करती हुई।



अहमदाबाद-दाण्डी: शांति संदेश साइकिल यात्रा के दाण्डी पहुंचने पर रखे कार्यक्रम में मंच पर (दाएं से) बी.के. भारती, प्राता शंकर राणा जी, जिला सेशन जज निरंजन पंड्या तथा बी.के. सरला जी।



बनाराला: में आध्यात्मिक सम्मेलन में अनेक आत्माएं शांति का संदेश सुनते हुए।

पहेली हल करो तो जानें.....

□ ब्र.कु. प्रेम सागर, लक्ष्मीनगर., देहली

सामने हम एक 49 खानों की बनी सारणी का चित्र दे रहे हैं। जिसमें तीन प्रकार के खाने हैं, पहला सफेद, दूसरा लिखा हुआ और तीसरा काला। अब आपको सफेद वाले खाने में सही उत्तर भरना है, जिसमें हमने एक से लेकर दस तक नम्बर दिए हुए हैं। उसके लिए हम आपको अन्त में बाप दादा द्वारा उच्चारें हुए महावाक्यों का एक समूह दे रहे हैं। यह समूह भी दस पंक्तियों का है। अब आपको करना क्या है प्रत्येक सफेद खाने वाले नम्बर में आपको उसी नम्बर की पंक्ति वाले वाक्य से एक शब्द चुनकर उस खाने में भर देना है। उदाहरणार्थ एक नम्बर वाले खाने में एक नम्बर की पंक्ति से एक शब्द, इसी प्रकार दूसरे वाले खाने में दूसरे नम्बर की पंक्ति से, आगे इसी तरह..... दस तक भरिए। जिससे अन्त में आपको सभी शब्दों को पढ़ने के पश्चात् कोई न कोई बाप दादा द्वारा दिया गया धारण युक्त सलोगन मिलेगा। ये सलोगन लगभग 21 शब्दों का होगा, जब आप सफेद वाले खाली खानों को भर लेंगे तो उसके पश्चात् अपने उत्तर का सही मिलान कीजिए, जो कि इसी अंक में कही पर दिया हुआ होगा। इस पहेली को हल करने के लिए निर्धारित समय 10 मिनट।

मीठे	बच्चे	अब	1
	2	अपने	3
योग	4	5	शक्ति
	भरो	कि	6
वाता वरण	7	8	
	सको	न	
कि		9	आपको
			10

महावाक्यों का समूह

- 1) तुम बच्चे जानते हो कि आगे चल दिन-प्रतिदिन समय और ही नाजुक होता जायेगा।
- 2) फिर भी समय प्रमाण बाप तुम बच्चों को समझानी देते रहते हैं।
- 3) इसलिए बाप कहते हैं बच्चे इस पुरानी दुनिया में किसी से भी दिल नहीं लगानी है।
- 4) यदि तुम बच्चे बाप की मत पे न चलेंगे तो पिछाड़ी में बहुत पछताना पड़ेगा।
- 5) क्या तुम बाप की इतनी-सी बात भी नहीं मान सकते।
- 6) बाप का काम तो राय देना है, आगे आप बच्चों की मरजी राय पे चलें या न चलें।
- 7) फिर भी बाप को बच्चों का ख्याल तो रखना पड़ता है।
- 8) जो बच्चे अभी स्वयं को ही नहीं बदल सके वे विश्व को क्या बदलेंगे।
- 9) जबकि वातावरण तो दिन-प्रतिदिन और ही बिगड़ता जायेगा।
- 10) इसलिए ये कभी भी नहीं सोचना कि परिस्थिति बदले तो हम बदलेंगे। अच्छा! □



अन्तर्मुखी आन्ध्र प्रदेश में समान स्वच्छ और पवित्र होगी।



तिनसुकिया: में दस लाख 'मिनिट्स संग्रह अभियान' के उपलक्ष्य में हुए कार्यक्रम में तिनसुकिया के एस.डी.ओ. भाला टी.एन. शोरकाकोटी की अपने विचार रखते हुए।